Sri Krishna Chaitanya
KARM
Antarang Ras Aswadan Mandir

ISKCON and Gauḍīya Vaiṣṇavism

DISCLAIMER

The content contained in this Document (Transcription) is intended to provide accurate and authoritative information with regard to the subject matter covered and is purely based on Bonafide Gaudiya Vaishnava Scriptures and Granthas of Srila Rupa Gosvami, Srila Raghunatha Dasa Gosvami, Srila Prabodhananda Sarasvati, Srila Sanatana Gosvami. It is not based on and does not reflect any personal opinion of any particular individual.

It is merely for informational and educational purposes and meant to spread Vedic knowledge and is in no sense meant to cause any harm to anyone in whatsoever manner possible, hurt/injure the religious sentiments, feelings, beliefs or philosophies of any individual/group or organization. It is not intended to target any person/group of persons/society/institution/entity and should not be relied upon as recommending or promoting any disrepute to any person (living or dead), group of persons, entity or idea nor it intends to spread any rumours. If someone's religious or personal sentiments are hurt, it is purely unintentional and the reader is at liberty to stop/discontinue reading. UNDER NO CIRCUMSTANCE SHALL WE HAVE ANY LIABILITY OR RESPONSIBILITY TO ANY PERSON OR GROUP OF PERSONS OR ENTITY REGARDING ANY LOSS OR DAMAGE INCURRED, OR ALLEGED TO HAVE INCURRED, DIRECTLY OR INDIRECTLY, BY THE INFORMATION CONTAINED IN THIS DOCUMENT.

The Document contains references from genuine publicly available sources. We respect these sources and are in no way trying to infringe on the respective copyrights having obtained by their respective authors, if any. Copyright Disclaimer under section 107 of the Copyright Act of 1976, allowance is made for "fair use" for purposes such as criticism, comment, news reporting, teaching, scholarship, education and research. Fair use is a use permitted by copyright statute that might otherwise be infringing."

1

Guru's Praṇāma Mantra: namaḥ oṁ viṣṇu pādāya

भक्त– महाराज जी ! Iskcon में जो यह प्रणाम मन्त्र बोला जाता है, *'नमः ॐ विष्णुपादाय..'*, क्या इसका प्रचलन प्रारम्भ से ही था, या अभी कुछ वर्ष पूर्व ही इसका प्रचलन हुआ है ?

महाराज जी– यह गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय ५०० वर्ष से भी ज़्यादा पुराना है और सभी प्राचीन परम्परायें जो हैं, अभी भी हैं, जो ५०० वर्ष से चलती आ रही हैं। आप नवद्वीप जाओगे, तो भी आपको ये परम्परायें मिलेंगी। आप जगन्नाथ पुरी चले जाओ, आप वृन्दावन चले जाओ, राधाकुण्ड चले जाओ, सभी परम्परायें आपको मिलेंगी; जो प्राचीन साधु संत हैं, मिलेंगे। और हमने स्वयं जाकर देखा है, और हमने सबसे बात भी की है। किसी भी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के किसी भी संत का कोई प्रणाम मन्त्र नहीं होता है। *'नमः ॐ विष्णुपादाय..'* यह कोई प्रणाम मन्त्र नहीं होता है। यह सिर्फ invent किया गया है। यहाँ भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के बाद में, यहीं से invent हुआ है।

अब Iskcon या भक्तिसिद्धान्त जी ने तो भक्तिविनोद ठाकुर का ही प्रणाम मन्त्र बनाया है। आप जानकर हैरान हो जायेंगे कि भक्तिविनोद ठाकुर के जो निजी पुत्र हैं, ललिता प्रसाद ठाकुर, जो उनके अपने पुत्र हैं, जिनको उन्होंने दीक्षा दी है, वह भी ऐसा कोई प्रणाम मन्त्र नहीं करते, *'नमः ॐ भक्ति विनोदाय..'*, ऐसा कुछ भी नहीं करते, स्वयं के पुत्र ! और उनकी परम्परा में भी उनका कोई प्रणाम मन्त्र नहीं है। आज तक भक्तिविनोद ठाकुर की परम्परा चल रही है। उनके शिष्य हैं, उनके शिष्यों के शिष्य हैं, ऐसे उनके वहाँ भी कोई प्रणाम मन्त्र नहीं है। गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में किसी भी गुरु का कोई प्रणाम मन्त्र नहीं होता। जो प्रणाम करते हैं, आदर भाव से, वह इस प्रकार है–

"अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥"

"मैं गुरुदेव को प्रणाम करता हूँ, जो मेरी अज्ञानता दूर करते हैं और मेरे बन्द नेत्रों को खोलते हैं।" इस भाव से प्रणाम किया जाता है गुरुदेव को। गुरुदेव का कोई भी प्रणाम मन्त्र नहीं होता।

और प्रणाम मन्त्र से भोग लगाना, *'नमः ॐ विष्णु पादाय..'* से भोग लगाना, यह बिल्कुल अशास्त्रिक है। बीज मन्त्र से भोग लगाया जाता है, न कि प्रणाम मन्त्र बना के, *'नमः ॐ विष्णुपादाय..'* करके भोग लगाया जाता है। ऐसे भोग नहीं लगाया जाता है।

हम यह नहीं कह रहे कि आप हमारी बात सुनें या मानें। Iskcon आदि संस्थाओं में कहते हैं कि बाहर मत जाओ। हम तो कह रहे हैं कि बाहर जाकर आप खुद देखें। हमारी बात आप मत समझें। आप खुद नवद्वीप जायें, वृन्दावन जायें, राधाकुण्ड जायें, जगन्नाथ पुरी जायें, जहाँ गौड़ीय वैष्णव प्राचीन काल से भक्ति कर रहे हैं। आप खुद देखोगे, न आपको कोई ऐसा प्रणाम मन्त्र मिलेगा, न कोई ऐसी भोग लगाने की विधि मिलेगी। *'नमः ॐ विष्णुपादाय..'* करो, तीन बार बोलें, *'नमो महा-वदान्याय..',* भोग लगाने की ऐसी कोई विधि नहीं है।

भोग लगाने की विधि क्या है?

पहले भोग कृष्ण को लगता है। राधाकृष्ण को इकट्ठे भोग नहीं लगता। पहले बीज मन्त्र द्वारा, जो दीक्षा में बीज मन्त्र मिलते हैं, उनसे श्रीकृष्ण को भोग अर्पित किया जाता है। श्रीकृष्ण ने जब पा लिया, फिर उन्हें कुल्ला करा लिया, उनका मुख प्रक्षालन, सब कर लिया, फिर वह प्रसाद, राधारानी को प्रसाद मिलता है।

पहली बात है, राधारानी को भोग नहीं मिलता, उनको प्रसाद मिलता है। फिर राधारानी और सखियाँ प्रसाद पाती हैं श्रीकृष्ण का। जब राधारानी, सखियाँ पाकर निवृत्त हो जाती हैं, उसके बाद वह प्रसाद मञ्जरियों को मिलता है, हमें मिलता है, यानि कि रूप-रति मञ्जरी को, हमारी गुरु मञ्जरी को, हमें मिलता है वह प्रसाद। तो, यह विधि है। *'नमः ॐ विष्णुपादाय..' 'नमो महा-वदान्याय..'* यह कोई विधि ही नहीं है भोग लगाने की।

आप सोचें ! आपने अपना जीवन अर्पण किया है ! कम से कम प्रसाद की विधि तो जान लें। कम से कम यह तो जान लें कि हम हर समय प्रणाम कर रहे हैं ठाकुरजी को, विग्रह को, तब भी हम *'नमः ॐ विष्णुपादाय..'* कर रहे हैं। क्या ऐसा कोई करता है ? गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय छोड़िये, क्या किसी और सम्प्रदाय में भी ऐसा होता है ? कभी एक बार देखें तो सही ! Why become a blind or a fanatic follower ??

जाकर देखें ! मैं जो कर रहा हूँ, जहाँ मैंने अपना जीवन अर्पण किया है, क्या वह वास्तव में विधान के अनुसार, सब आचार्यों के विधान के अनुसार है या कपोल-कल्पित है ?

पूरे गौड़ीय वैष्णव समाज में चले जाओ, Iskcon को, Gaudiya Math को, जो Gaudiya Math की संस्थायें हैं, उन्हें छोड़ के कहीं भी किसी के गुरु का प्रणाम मन्त्र नहीं है।

कितने सिद्ध गुरु हुए हैं, कितने सिद्ध गुरु हुए हैं ! किसी का कोई प्रणाम मन्त्र नहीं है।

जगन्नाथदास बाबाजी महाराज की समाधि है। नवद्वीप में कोई भी जा सकता है, आप वहाँ जाकर देखो कि उनका कोई भी प्रणाम मन्त्र लिखा है कहीं ? क्या उनकी समाधि पर भी उनका प्रणाम मन्त्र है ? कोई है ही नहीं, तो कोई करेगा क्यों ?

बनाने को तो आप कुछ भी बना सकते हैं। न कोई गौरकिशोर दास बाबाजी का प्रणाम मन्त्र है, न भक्तिविनोद ठाकुर का प्रणाम मन्त्र है, किसी का कोई प्रणाम मन्त्र नहीं है। अगर प्रणाम मन्त्र ही है, तो भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के अनुयायियों से पूछना चाहिये कि गौरकिशोर दास बाबाजी कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे अपने गुरु का ?

बताओ गौरकिशोर दास बाबाजी कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे, बताओ ?? और भक्तिविनोद ठाकुर कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे ?? जगन्नाथदास बाबाजी कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे ?? फिर वह प्रणाम मन्त्र भी बता दो कौन सा है और वह भी तो लिख दो। आप इतनी respect दे रहे हो प्रणाम मन्त्र करके, तो यह भी तो respect दिखायें कि गौरकिशोर दास बाबाजी, जो भक्तिसिद्धान्त जी के गुरु हैं, वे कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे ? यह वर्णन तो बताओ। हम उनकी समाधि पर जाकर आपको दिखा देंगे कि गोपाल भट्ट गोस्वामी का कोई प्रणाम मन्त्र नहीं होता।

कोई परम सिद्ध क्यों न हो! गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में या किसी भी सम्प्रदाय में कोई गुरु का प्रणाम मन्त्र नहीं होता। हम इतने सम्प्रदायों के सन्तों को जानते हैं। कोई प्रणाम मन्त्र नहीं होता गुरु का। यह बिल्कुल कपोल कल्पित है।

2

Mātājī's name – Devi Dāsī.... Or.... In Mātājī's name-Devi Dāsī ???

भक्त– महाराज जी ! Iskcon दिल्ली से श्यामशरण दास जी हैं। उनका प्रश्न है कि जब Iskcon में स्त्रियों को दीक्षा दी जाती है, तो उनके नाम के आगे देवी दासी लगाया जाता है। जबकि उन्होंने यह देखा है कि जो अन्य सम्प्रदाय हैं, या अन्य जगह पर देवी दासी नहीं लगाया जाता, खाली दासी होता है। वह जानना चाह रहे हैं, जो देवी दासी लगाया जाता है, दिया जाता है, यह कितना सही है ?

महाराज जी– आपने यह प्रश्न पूछा है कि Iskcon में स्त्रियों के नाम के आगे देवी दासी बोला जाता है, तो क्या यह ठीक है ?

देखिये, हम आपको फिर वही बात कहेंगे कि यदि आपको वास्तव में सत्य जानना है, तो एक बार स्वयं अपनी आखों से जाकर देखें। नवद्वीप चले जायें, जगन्नाथ पुरी चले जायें, वृन्दावन चले जायें, राधाकुण्ड चले जायें। जहाँ गौड़ीय वैष्णवों के पुराने-पुराने आश्रम हैं, आप जाकर देखें कि स्त्रियों के क्या नाम होते हैं ? इससे सरल उत्तर हम आपकों क्या देंगे ? आप स्वयं जाकर देखें कि क्या नाम होते हैं। आप जाकर आश्चर्यचकित हो जायेंगे, आप जाकर नाम देखेंगे कि किसी भी स्त्री का नाम 'देवी दासी' नहीं होता, जैसे कि विशाखा देवी दासी, ललिता देवी दासी, इन्दुलेखा देवी दासी। ऐसा कोई नाम नहीं होता। सबका नाम क्या होता है ? हमारी भी कोई गुरु बहन हो, तो उनका क्या नाम है ? ललिता दासी, विशाखा दासी, 'देवी दासी' नहीं होता।

और हमारे गुरुदेव श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज हैं, जिनको पिछली पूरी century का सबसे प्रकाण्ड पण्डित महात्मा बोला जाता है। जितने भी गौड़ीय वैष्णव हैं, सभी उनके ग्रन्थ पढ़ते हैं। तो हमारे यहाँ पर उन्होंने एक लड़की को नाम दिया था। उसका नाम ही महाराज जी ने दिया– देवी दासी। राधारानी का एक नाम है– देवी; तो उनकी दासी। और राधारानी का 'देवी'

नाम कई पुराणों में है। रूप गोस्वामी ने भी बताया है और अनेक जगह 'देवी' से राधारानी को सम्बोधित किया जाता है।

तो महाराज जी ने नाम ही उस लड़की को दिया– देवी दासी। ललिता देवी दासी नहीं, फिर तो नाम हो गया उसका– ललिता राधा दासी ! या इन्दुलेखा देवी दासी नहीं, फिर तो उसका नाम हो गया– इन्दुलेखा राधा दासी !

यह क्या नाम हुआ ? देवी दासी नाम किसी स्त्री को नहीं दिया जाता, दासी बोला जाता है। दास, दासी।

तो अगर देवी दासी बोला जा रहा है स्त्री को, तो पुरुषों का नाम भी होना चाहिये– कृष्ण मुरारी देव दास या माधव देव दास, केशव देव दास ! नहीं !

माधव दास, केशव दास– ये नाम हैं। जब वे माधव दास, केशव दास हैं, तो ललिता दासी, विशाखा दासी क्यों नही हैं ?

सारा गौड़ीय सम्प्रदाय एक प्रकार से चलता है। Iskcon, Gaudiya Math का राग अलग ही निकलता है। तो आप खुद सोच सकते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है।

Blind following से कुछ नहीं मिलने वाला। Basic चीज़ों में जाइये। गौड़ीय सम्प्रदाय में न किसी का कोई प्रणाम मन्त्र है, न कोई देवी दासी है।

और षड्गोस्वामी के समय से यह सिद्ध प्रणाली की परम्परा चल रही है। गोपालभट्ट गोस्वामी जी ने भी श्रीनिवास आचार्य को सिद्ध प्रणाली दी। आप जाकर देखें- ब्रज में, नवद्वीप में, सब जगह सिद्ध प्रणाली दे रहे हैं; और आप जाकर देख सकते हैं कि भोग कैसे लगा रहे हैं।

और देवी दासी कुछ नहीं होता।

सोचिये, नाम में ही इतना काल्पनिक तत्त्व डाला हुआ है। और इतने blind followers हैं कि उनको देखते भी नहीं हैं। देखें तो सही कि कैसे नाम होते है कहीं पर !

और किसी भी सम्प्रदाय में चले जाइये, नाम दास या दासी करके ही दिया जाता है। और कहीं पर भी देवी दासी नहीं होता।

जैसे Iskcon में हमारे यहाँ एक भक्त हैं, उनको दीक्षा का नाम दिया गया था कृष्ण आराध्य देवी दासी। परन्तु जब उन्होंने Iskcon छोड़ा, यहाँ बाबाजी महाराज का आश्रय लिया, तो बाबाजी ने फिर उनको नाम दिया– कृष्ण आराध्य दासी। बाबाजी महाराज ने 'देवी' शब्द हटा दिया था। तो आप खुद सोच सकते हैं कि नाम वही है– कृष्ण आराध्य दासी, न कि कृष्ण आराध्य देवी दासी।

बाबाजी महाराज ने उनका नाम कर दिया था– कृष्ण आराध्य दासी। तो कृष्ण आराध्य देवी दासी जो है, वह नाम गलत है। कृष्ण आराध्य दासी तो ठीक है! देवी दासी शब्द गलत है। किसी भी परम्परा में देवी दासी शब्द प्रयोग नहीं किया जाता।

3

Difference between Cult & Sampradāya

भक्त– महाराज जी! Iskcon के एक भक्त हैं, उदयकृष्ण दास जी। उनका प्रश्न है कि जिस संस्था से जुड़े हुए हैं, कैसे पता चलेगा कि वह संस्था प्रामाणिक है या किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाया गया एक धार्मिक समुदाय है? कैसे पता चलेगा कि वह एक bonafide परम्परा है या एक cult है?

महाराज जी– आपका प्रश्न है कि कैसे पता चले कि जहाँ से हम जुड़े हुए हैं, वह bonafide परम्परा है या cult है?

यह जानने के लिये आपको दोनों बातें जाननी होंगी, उत्तर आपको मिल जायेगा। क्या दोनों बातें जाननी हैं, कि cult क्या होता है और सम्प्रदाय क्या होता है?

Cult होता है किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाया गया कोई मत। किसी को कोई चीज़ लगी कि इस प्रकार से धर्म का पालन करके भगवद् प्राप्ति होती है, उनको ऐसा लगा, तो यदि उनको कोई follow करता है, तो वह एक cult को follow कर रहा है।

जो उस charismatic personality ने practices बतायी हैं, यदि हम उनको follow कर रहे हैं और वह किसी को follow नहीं कर रहे, इसका मतलब वह व्यक्ति cult है, वह cult को follow कर रहा है।

अच्छा, सम्प्रदाय क्या होता है?

सम्प्रदाय होता है– *'सम्यक् प्रदायति इति संप्रदाय।'*

वह ज्ञान, वे practices, जो अनादि काल से पूरे सम्प्रदाय में चलती हुई आ रही हैं, यदि उसका कोई पालन करता है, तो वह प्रामाणिक सम्प्रदाय में है। यानी कि उसके गुरु भी वही follow

करते थे, उनके गुरु भी वही follow करते थे, उनके गुरु भी, सब वही follow करते थे। यदि वही का वही, as-it-is follow करते हुए आ रहा है कोई भी ज्ञान, तो निश्चित् रूप से आप प्रामाणिक सम्प्रदाय में हैं।

पर यदि केवल आप सिर्फ एक विशेष व्यक्ति की बात मान रहे हैं– जिनका मत-मतान्तर बाकी सबसे बिल्कुल अलग है, तो निश्चित् रूप से समझें कि आप cult में हैं।

अब जैसे आपका प्रश्न है कि Iskcon के जो भक्त हैं, वे पूछना चाहते हैं कि Iskcon में हम हैं, तो यह प्रामाणिक सम्प्रदाय है या cult है? तो आप खुद सोच लो कि भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर हैं या प्रभुपाद हैं, वे पीला तिलक लगाते थे।

गौरकिशोर दास बाबाजी पीला तिलक नहीं लगाते थे,
जगन्नाथदास बाबाजी पीला तिलक नहीं लगाते थे,
भक्तिविनोद ठाकुर भी पीला तिलक नहीं लगाते थे,

तो तिलक साम्प्रदायिक नहीं है। ठीक है!

पञ्चतत्त्व मन्त्र, जो भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर करते हैं या प्रभुपाद करते हैं, वह है– *श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्त वृन्द*।

यह पञ्चतत्त्व मन्त्र न भक्तिविनोद ठाकुर करते थे, न जगन्नाथदास बाबाजी करते थे, न गौरकिशोर दास बाबाजी करते थे।

तो पञ्चतत्त्व मन्त्र भी जो है, सम्प्रदाय से नहीं कर रहे हैं।

'नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण प्रेष्ठाय भूतले' ऐसा कोई प्रणाम मन्त्र आज तक कभी भी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में नहीं हुआ। तो यह भी introduce किया गया है। यह भी सम्प्रदाय से प्रदान होता हुआ नहीं आ रहा, कि ऐसे प्रणाम मन्त्र होते हैं।

भोग लगाने की विधि– *'नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण प्रेष्ठाय'* या *'नमो महा वदान्याय'*, गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में ऐसे भोग कभी भी नहीं लगा।

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में हमेशा भोग कैसे लगता है? भक्तिविनोद ठाकुर कैसे भोग लगाते थे? जगन्नाथदास बाबाजी कैसे भोग लगाते थे और गौरकिशोर दास बाबाजी कैसे भोग लगाते थे? आप यह जान लें कैसे भोग लगाते थे, फिर आप देख लीजिये क्या Iskcon, गौड़ीय मठ वैसे भोग लगा रहा है? अगर नहीं लगा रहा, तो वह cult है; लगा रहा है, तो सम्प्रदाय है।

आप जगन्नाथदास बाबाजी की समाधि पर जाकर देख लीजिये कि वहाँ कैसे भोग लगता है। अगर नहीं जा सकते, तो हम बता देते हैं। हम तो कितनी बार जा चुके हैं।

गौड़ीय वैष्णव के दो स्वरूप होते हैं। एक नित्य नवद्वीप में, महाप्रभु के सेवक के रूप में, और एक ब्रज में युगल किशोर, राधाकृष्ण की सेविका के रूप में।

क्या आपको यह स्पष्ट बताया गया है Iskcon या गौड़ीय मठ में कि आपके दो स्वरूप हैं? यह भी नहीं बताया गया, तो निश्चित् रूप से यह cult ही है क्योंकि यह ABCD of Gauḍīya Vaiṣṇavism है।

मंगला आरती भी जो है, आप यह भी जाकर देख सकते हैं नवद्वीप में, जगन्नाथ पुरी में, वृन्दावन में मंगला आरती कैसे होती है?

'संसार दावानल' करना केवल मंगला आरती नहीं है।

मंगला आरती के पद हैं, जो जगन्नाथदास बाबाजी की समाधि पर भी होते हैं और जो गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज की वास्तविक समाधि है, वहाँ पर भी होते हैं और पूरे नवद्वीप, पूरे ब्रज, पूरे राधाकुण्ड, पूरे जगन्नाथ पुरी में वही पद होते हैं। यदि वही पद करे जा रहे हैं, तब तो सम्प्रदाय है, नहीं तो नहीं है।

जनेऊ पूरे गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में, Iskcon और Gaudiya Math के अलावा कोई नहीं डालता और यह साम्प्रदायिक जनेऊ नहीं है। जनेऊ सम्प्रदाय से प्राप्त नहीं हो रहा।

संन्यास दण्ड भी सम्प्रदाय से प्राप्त नहीं हो रहा। न गोस्वामी ने कभी दण्ड लिया, न जगन्नाथदास बाबा ने लिया और कहा जाता है कि भक्तिविनोद ठाकुर ने भी अंत में बाबाजी वेश लिया था। गौरकिशोर दास बाबाजी तो बाबाजी थे ही और जगन्नाथदास बाबाजी तो बाबाजी थे ही, तो गौड़ीय वैष्णव के सम्प्रदाय में संन्यास तो है ही नहीं। जनेऊ गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में है ही नहीं।

तो आप खुद सोचिये ! सम्प्रदाय मतलब जो as-it-is पूरी सम्प्रदाय की बात follow की जाये, तो हम सम्प्रदाय में हैं, नहीं तो फिर cult में हैं।

Cult मतलब एक व्यक्ति विशेष के फरमानों का पालन जहाँ होता है, वह cult है। जैसे कि फरमान जारी कर दिया, कि आप ऐसे-ऐसे भक्ति करो, और हम कर रहे हैं बिना सोचे। सम्प्रदाय में भक्ति कैसे होती है, यह तो जान लें !

Cult मतलब उसका एक अपना ही सब कुछ होता है, सब कुछ अपना ही है, जिसका पूरे सम्प्रदाय से कोई लेना देना ही नहीं है, सब कुछ अपना।

पञ्चतत्त्व मन्त्र अपना,

भोग लगाने की विधि अपनी,

प्रणाम मन्त्र अपना अलग,

भोग अलग,

मंगला आरती अलग,

जनेऊ अलग,

संन्यास अलग,

दण्ड अलग,

बाबाजी वेश reject,

सिद्ध प्रणाली reject,

और new philosophy अपनाना कि 'you are not qualified !'

सब कुछ reject करके अपना मत स्थापित करने का मतलब है cult.

और जो as-it-is वही follow कर रहे हैं, जैसे भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने बेटे को सिद्ध प्रणाली दी, वही मंगला आरती और पञ्चतत्त्व मन्त्र जो वे खुद करते हैं, वही उन्होंने अपने बेटे को दिया। उनके बेटे ने अपने अन्य उनके शिष्यों को दिया।

हम उन शिष्यों से बात करते हैं। वे हमारे मित्रगण हैं। वे बताते हैं कि जो पञ्चतत्त्व मन्त्र हम करते हैं, वे भी वही पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं। क्या है हमारा पञ्चतत्त्व मन्त्र ?

'श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द श्रीअद्वैतचन्द्र गदाधर श्रीवासादि गौरभक्त वृन्द।'

यह पञ्चतत्त्व मन्त्र हम करते हैं,

गौरकिशोर दास बाबाजी की समाधि पर भी यही होता है,

जगन्नाथदास बाबाजी भी यही करते थे,

जगन्नाथ पुरी में भी सभी यही करते हैं,

नवद्वीप में सभी यही करते हैं,

राधाकुण्ड में सभी यही करते हैं,

वृन्दावन में सभी यही करते हैं,

मणिपुर में सभी यही करते हैं,

सभी यही पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं, Iskcon Gaudiya Math को छोड़ कर !

जो मंगला आरती हम करते हैं, सभी स्थानों में वही करते हैं।

कोई जनेऊ नहीं डालता,

कोई संन्यास दण्ड नहीं ग्रहण करता,

'ॐ भूर्भुवः स्वः' किसी के दीक्षा मन्त्रों में नहीं है।
तो आप खुद सोच सकते हैं कि यह सम्प्रदाय है या cult है। निश्चित् रूप से cult है!

Cult मतलब एक व्यक्ति के मत-मतान्तर के पीछे हम पागल हो गये हैं। Charismatic personality है, उसने अपने आकर्षण द्वारा सबको आकर्षित कर लिया है, हम उन्हीं को blindly follow कर रहे हैं।

सम्प्रदाय मतलब जिसमें सब कुछ bestowed होता है।

भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से पूछिये कि क्या यह पञ्चतत्त्व मन्त्र आपको bestowed है या आपका बनाया हुआ है?

क्या यह मंगला आरती आपको bestowed है या बनायी हुई है?

क्या यह भोग लगाने की पद्धति, जो आप लगाते हो *'नमः ॐ विष्णुपादाय'*, यह bestowed है?

Bestowed का मतलब क्या होता है– प्रदान की गयी है या फिर निर्माण की गयी है??

सम्प्रदाय मतलब, जो सारी चीज़ें प्रदान की गयी हों। आपने तो सारी चीज़ें निर्माण कर दी।

आपकी तो संस्था का नाम 'नव-निर्माण योजना' होना चाहिये था। आपने सब कुछ नव-निर्माण कर दिया।

आपने पञ्चतत्त्व मन्त्र का निर्माण कर दिया,
आपने भोग पद्धति का निर्माण किया,
अपने नयी मंगला आरती का निर्माण किया,
जनेऊ का निर्माण कर दिया,
दण्ड का निर्माण कर दिया,

सभी प्रामाणिक practices, जो आपके पिताजी, आपके गुरु करते थे और सभी सिद्ध महात्मा करते थे, सभी reject कर दी, तो कैसे सम्प्रदाय में हो आप? उत्तर दो!

निश्चित् रूप से cult है, और कुछ नहीं है!

We are not teaching fanaticism. We are teaching– come out of fanaticism!

हम fanaticism नहीं teach कर रहे, हम कह रहे हैं– आँखें खोलो, भगवान् ने टांगें दी हैं, जाओ जगन्नाथ पुरी, जाओ नवद्वीप, जाओ राधाकुण्ड। जाओ देखो, कैसे मंगला आरती होती है! देखो, पञ्चतत्त्व मन्त्र क्या होता है! देखो, भोग कैसे लगता है!

कोई गंदी बात तो नहीं है?

भई! आपका अधिकार बनता है कि आपने कहीं जीवन समर्पित किया है, तो basics तो देख लो कैसे होते हैं?

कोई संन्यास ग्रहण करता है? कोई जनेऊ होता है?

कोई ब्राह्मण दीक्षा होती है किसी की?

4

Bhaktisiddhānta Sarasvatī Ṭhākura... The Saviour, The Destroyer

भक्त– महाराज जी, Iskcon के कुछ भक्त प्राचीन मायापुर गये थे तो उन्हें वहाँ पता चला कि भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी से पहले जिस प्रकार की गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में भक्ति की जाती थी, उनके आने के बाद उन्होंने उसमें बहुत ज़्यादा बदलाव किया। जिस प्रकार की उन्होंने भक्ति बतायी वैसी बिल्कुल भी नहीं की जाती थी, उनसे पहले। तो वे जानना चाह रहे हैं कि भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी ने क्या-क्या बदलाव किये गौड़ीय वैष्णव की भजन पद्धति में।

महाराज जी– सम्प्रदाय का अर्थ होता है–

सम्यक् प्रदायति इति सम्प्रदायः

जो सम्यक् रूप से प्रदान करें जो गुरु, जो उनके सम्प्रदाय में प्रारम्भ से दिया आ रहा हैं, वह एक सम्प्रदाय कहलाता है, प्रामाणिक गुरु कहलाते हैं।

आप खुद समझें कि भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर के पिताजी कौन हैं?
भक्तिविनोद ठाकुर।

और उनके गुरुदेव कौन हैं? वो क्या कहते हैं? हमारे गुरुदेव, गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज।

आप खुद सोचिये, अपने पिताजी के साथ तो वो कितने वर्ष रहे हैं। भक्तिविनोद ठाकुर और भक्तिसिद्धान्त सरस्वती एक ही घर में रहते थे, तो नियमित रूप से सुनते तो होंगे न की पञ्चतत्त्व मन्त्र क्या करते थे भक्तिविनोद ठाकुर? यदि वो कह रहे हैं कि उनकी दीक्षा गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज से हुई है तो उनके गुरु ने भी पञ्चतत्त्व मन्त्र कभी तो उन्हें बताया ही होगा? या कभी भी नहीं बताया होगा? भक्तिविनोद ठाकुर कौन सा पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं? कौन सा

करते थे? उनकी परम्परा में आज तक होता हुआ आ रहा है वही पञ्चतत्त्व मन्त्र। और वही पञ्चतत्त्व मन्त्र ५०० साल से होता हुआ आ रहा है। क्या है वह पञ्चतत्त्व मन्त्र?

श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द श्रीअद्वैतचन्द्र
गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।

यह पञ्चतत्त्व मन्त्र जो है ५०० साल से सभी सिद्ध महात्मा करते हुए आ रहे हैं, including भक्तिविनोद ठाकुर, including गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज।

निश्चित रूप से जो पिता के साथ रहते हैं, पञ्चतत्त्व मन्त्र तो सुना ही होगा?
उन्होंने कभी तो कीर्तन में किया होगा?
कभी तो बोला होगा?
कभी तो सुना होगा?
रोज़ ही! वास्तव में देखा जाये तो हर समय ही सुनते होंगे, अपने पिताजी के श्रीमुख से।

और इतने famous महात्मा थे, तो उनका तो कितना प्रचार था, पञ्चतत्त्व मन्त्र तो अनेकों को उन्होंने दिया था।

और उनके गुरु गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज हैं। वे भी कौन सा पञ्चतत्त्व मन्त्र करते थे?

श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द श्रीअद्वैतचन्द्र
गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।

तो हमारा प्रश्न है भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से– यह आपने किस आधार पर यह पञ्चतत्त्व मन्त्र बना दिया?

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द,
श्रीअद्वैत गदाधर, श्रीवासादि, गौरभक्त वृन्द।

क्या आपको यह भी विश्वास नहीं था कि आपके पिताजी भक्तिविनोद ठाकुर और आपके गुरुदेव श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी, वे जो पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं, वो भी सही है या गलत, यह भी विश्वास नहीं था आपको?

ये सिद्ध महात्मा जगन्नाथदास बाबाजी, क्या ये जो पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं, क्या यह सही है या गलत, यह भी विश्वास नहीं था आपको?

सारे सिद्ध महात्मा, centuries से, यही पञ्चतत्त्व मन्त्र करते हैं।

आप बताइये, आपको यह भी सही नहीं लगा कि सब लोग भक्ति सही नहीं कर रहे हैं, यही आपका कारण है न?

भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर को नहीं लगा सही, कि भक्ति अच्छे तरीके से हो रही है या खराब हो रहा है।

अरे भाई, पञ्चतत्त्व मन्त्र में क्या बदलाव की ज़रूरत है, आप हमें उत्तर दीजिये इस बात का?

सिद्ध महात्मा कर रहे हैं, सभी कर रहे हैं, आज तक कर रहे हैं। भक्तिविनोद ठाकुर ने किया। उन्होंने अपने बेटे को भी वही पञ्चतत्त्व मन्त्र दिया। आज तक उनकी परमपरा में हो रहा है।

आप गौरकिशोर दास बाबाजी की समाधि पर जाकर देखो, कौन सा पञ्चतत्त्व मन्त्र हो रहा है?

श्रीकृष्ण चैतन्य? यह तो भक्तिसिद्धान्त, इन्होंने शुरु कर दिया। आप बताओ पञ्चतत्त्व मन्त्र कैसे गलत हो सकता है? आप बताओ इसका उत्तर। कैसे कोई बदल सकता है पञ्चतत्त्व मन्त्र को?

दूसरी बात!

आपके पिताजी सिद्ध महात्मा थे। इतने बड़े महात्मा थे। वे मंगल आरती तो करते ही होंगे? ऐसा तो नहीं होगा की आपने कभी देखी नहीं, सुनी नहीं? पचासों बार आपने अपने पिताजी को मंगल आरती करते हुए देखा होगा?

और आपके गुरुदेव– गौरकिशोर दास बाबाजी, वे भी सिद्ध महात्मा थे। क्या वे भी मंगल आरती नहीं करते थे कभी भी? आपने ज़रूर देखा होगा उनको मंगल आरती करते हुए? देखा होगा, कैसे करते हैं, किनकी करते हैं?

तो आपने मंगल आरती के सारे पद भी छोड़ दिये?
मंगल आरती भी गलत करते थे आपके पिताजी, भक्तिविनोद ठाकुर?
मंगल आरती भी गलत करते थे?
पञ्चतत्त्व मन्त्र भी गलत करते थे वे लोग?

गौरकिशोर दास बाबाजी, मंगल आरती करते थे पञ्चतत्त्व की, और राधा-कृष्ण की मंगल आरती करते हैं, तो वे आरती के पद करते हैं वो सारे..., आप चले जाओ जगन्नाथ पुरी, नवद्वीप, वृन्दावन, राधाकुण्ड, वही पदगान से आज तक मंगल आरती हो रही है, जो जगन्नाथदास बाबाजी करते थे, जो भक्तिविनोद ठाकुर करते थे, जो गौरकिशोर दास बाबाजी करते थे। पूरे प्रामाणिक गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में, Iskcon Gaudiya Math को छोड़ दो, एक ही प्रकार से मंगल आरती होती है।

हमारा प्रश्न है भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से, मंगल आरती में क्या समस्या हो गई, जो आपने उसको बदल दी?

मंगल आरती से समस्या आपको ही गई?
पञ्चतत्त्व मन्त्र में भी आपको समस्या हो गई?
अच्छा! आपके पिताजी कौन है?
भक्तिविनोद ठाकुर।

वो कैसा तिलक लगाते थे?

पीले रंग का और पत्ती वाला लगाते थे, तुलसी पत्ती का?

नहीं लगाते थे।

कैसा तिलक लगाते थे भक्तिविनोद ठाकुर?

जैसा हमने लगाया है– नित्यानन्द परिवार का।

आपके पिताजी हैं, वे नित्यानन्द परिवार के थे।

आपके जो गुरुदेव हैं, आप कहते हैं गौरकिशोर दास बाबाजी हैं– वे अद्वैत परिवार के हैं। वे circular तिलक लगाते हैं, तो आपको अपने गुरुदेव और अपने पिताजी के तिलक भी आपको गलत लगने लग गये अचानक ही?

आपने अपना तिलक भी नया लगा दिया। अपने तिलक नया बना दिया अपना? सारे सिद्ध महात्माओं का तिलक reject कर दिया और नया तिलक जो आज तक किसी ने कभी नहीं लगाया...

पञ्चतत्त्व मन्त्र जो आज तक कभी किसी ने नहीं किया...

मंगल आरती जो आज तक कभी, कभी हुई ही नहीं...*नमः ॐ विष्णुपादाय*... ये सब ऐसे कोई मंगल आरती होती है?

और जो आपने प्रणाम मन्त्र नये डाल दिये– *नमः ॐ विष्णुपादाय।* पूरे गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में कोई प्रणाम मन्त्र होता ही नहीं है *नमः ॐ विष्णुपादाय* करके। आप जाकर देखो नवद्वीप, वृन्दावन, मायापुर, जगन्नाथ पुरी– कोई प्रणाम मन्त्र होता ही नहीं है गुरुदेव का, किसी सम्प्रदाय में, और जाकर देख लो।

भक्तिविनोद ठाकुर के पुत्र हैं ललिताप्रसाद ठाकुर, वो तो नहीं करते भक्तिविनोद ठाकुर का कोई प्रणाम मन्त्र। उनको नहीं पता उनके पिताजी का प्रणाम मन्त्र कोई? और आपने प्रणाम मन्त्र भी नये डाल दिये! आपने डाल दिये तो हम आपसे प्रश्न पूछते हैं कि गौरकिशोर दास बाबाजी

अपने गुरु का कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे? उनके भी तो कोई गुरु थे! पहले तो नाम बताओ कौन थे उनके गुरु? और बताओ उनका प्रणाम मन्त्र क्या था? चार लोगों के प्रणाम मन्त्र हैं, बाकि किसी का प्रणाम मन्त्र भी नहीं है? कमाल की बात हो गई!

अच्छा आप अपने सब शिष्यों को सिखा रहे हो प्रणाम मन्त्र, आपके गुरुदेव ने प्रणाम मन्त्र नहीं सिखाया था, "मेरे गुरुदेव का यह प्रणाम मन्त्र है"? यह आप ही बोल रहे हो न गौरकिशोर दास बाबाजी आपके गुरु हैं? आप अपने सब शिष्यों को बोलते हो प्रणाम मन्त्र करो गुरु का ऐसा ऐसा, न वो भक्तिविनोद आया...भक्ति सिद्धान्त वार्षभानवे...सब प्रणाम मन्त्र करो! अच्छा! तो आपके गुरुदेव कौन सा करते थे प्रणाम मन्त्र, वह आपको जरूर बताया होगा...बताओ?

अरे गुरुदेव का अपना नाम तक नहीं बता रहे आप, अपने गुरुदेव के गुरुदेव का नाम तक नहीं बता रहे। सारी चीज़ें कल्पना हैं? पञ्चतत्त्व मन्त्र एक कल्पना, नया बना दिया! तिलक...जो कभी नहीं था...यह भी काल्पनिक तिलक बना दिया! मंगल आरती के सब कुछ जो मंगल आरती के पद होते थे, वह भी आपने बन्द कर दिये! नया मंगल आरती, *संसार दावानल* को आपने मंगल आरती बना दिया! जो वास्तविक पद हैं– राधा-कृष्ण के, पञ्चतत्त्व के, वो आपने बन्द करवा दिये। और सम्प्रदाय क्या होता है– *सम्यक् प्रदायति*, जो सम्यक् वही प्रदान कर रहे हैं जो आपके गुरुदेव, गुरुवर्ग ने आपको दिया। आपने सब कुछ reject कर दिया, अपने सब गुरुवर्ग का, पिताजी का।

और reject करने के बाद भी आपकी हैरानगी है कि आपने उनकी सारी सिद्ध प्रणाली को reject कर दिया। आपके गुरुदेव को नन्दकिशोर गोस्वामी ने सिद्ध स्वरूप दिया था। आपके पिताजी को उनके गुरुदेव ने सिद्ध प्रणाली दी थी, जगन्नाथदास बाबाजी को उनके गुरु ने सिद्ध प्रणाली दी थी। जगन्नाथदास बाबाजी अपने शिष्यों को सिद्ध प्रणाली देते थे, भक्तिविनोद ठाकुर ने आपके भाई ललिता प्रसाद ठाकुर को सिद्ध प्रणाली दी। आपने सिद्ध प्रणाली को भी bogus बना दिया? जो सब कुछ हो रहा था, जो भक्तिविनोद ठाकुर कर रहे थे, जो जगन्नाथदास बाबाजी, जो गौरकिशोर दास बाबाजी कर रहे थे, वो सारी चीज़ों को तो आपने reject कर दिया। और सम्प्रदाय का मतलब होता है *सम्यक् प्रदायते*, सम्यक् रूप से जो प्रदान किया जाता

है, वह सम्प्रदाय कहलाता है। आपने सब कुछ reject कर दिया और उसके बाद, आप उनकी photo फिर भी लगा रहे हो कि हम इनकी शिक्षा पालन करें। बताओ, क्या पालन कर रहे हो? न उनका पञ्चतत्त्व मन्त्र follow कर रहे हो, भोग पद्धति तक तो आपने बदल दी। क्या आपने कभी अपने पिताजी को भोग लगाते हुए नहीं देखा होगा?

हमारे यहाँ के छोटे-छोटे बच्चों को पता है कि पिताजी कैसे भोग लगाते हैं...तीन बार भोग लगाने जाते हैं पिताजी।

हमारे यहाँ कितने शिष्य हैं...। उनके छोटे-छोटे बच्चे भी अब बड़े हो रहे हैं। उनको भी पता है भोग कैसे लगता है, तो क्या आपको यह भी नहीं पता कि भोग कैसे लगता था...? आपके पिताजी भोग भी गलत लगाते थे? आपके गुरु भोग भी गलत लगाते थे? आपने भोग पद्धति भी reject कर दी! ५०० साल से भोग जैसे लग रहा था...सारी भोग पद्धति भी गलत कर दी, reject कर दी, अपने नये मन्त्र ईज़ाद कर दिये, *नमो महावदान्याय*..., *नमः ॐ विष्णु*... ऐसे भोग लगता है?? जाकर देख लो किसी भी प्रामाणिक सम्प्रदाय के अन्दर। नृसिंह भगवान् को ऐसे भोग लगता है...*नमो महावदान्याय*...करके? या लक्ष्मी नारायण या भगवान् कृष्ण...किसी भी आप सम्प्रदाय में चले जाओ...वल्लभपुर, कहीं पर भी चले जाओ, क्या ऐसे भोग लगता है? नाथद्वारा जाकर देखो। बीज मन्त्रों के द्वारा भोग लगता है, जहाँ मर्ज़ी चले जाओ। *नमः ॐ विष्णुपादाय*... से कैसे भोग लगता है?

अरे! कम से कम यह तो मान लो कि आपके सिद्ध गुरु थे गौरकिशोर दास बाबाजी, यह तो मान लो। भक्तिविनोद ठाकुर, इतने उच्च कोटि के महात्मा...वे भोग तो सही लगाते ही होंगे? और निश्चित् रूप से, आपने उन्हें भोग लगाते हुए हज़ारों बार देखा होगा। १ साल में ३६५ दिन होते हैं। कम से कम कुछ साल तो अपने पिताजी के साथ आप रहे ही होंगे? रोज़ भोग लगाते होंगे वो, देखते होगे कैसे भोग लगाते हैं, देखते होगे पञ्चतत्त्व मन्त्र क्या है? देखते होगे मंगल आरती? मंगल आरती तो करते थे न भक्तिविनोद ठाकुर। देखते नहीं थे क्या आप कोई भी चीज़?? सारी चीज़ें गलत हो गयी आपके पिताजी की, आपके गुरुजी की? और फिर आप

कहते हो कि मैं उनको follow करता हूँ। क्या follow कर रहे हो...? अच्छा आप हमें बता दो क्या follow कर रहे हो उनका?

आपके गुरुदेव या आपके पिताजी, क्या उन्होंने saffron पहना? ऐसा कहा जाता है कि भक्तिविनोद ठाकुर ने भी अन्त में बाबाजी वेश लिया था। उन्होंने भी सफेद पहना था। गौरकिशोर दास बाबाजी क्या saffron डालते थे? आप कहते हो कि उन्होंने आपको संन्यास दे दिया। कैसे दे दिया संन्यास आपको saffron का? डंडा दे दिया? उन्होंने डंडा लिया नहीं, आपको डंडा दे दिया? त्रिदंड आपको दे दिया? सफेद से लाल आपको दे दिया? भाई क्यों..? आप कहते हो हमने photo से संन्यास ले लिया, तो photo से तो आप कुछ भी ले सकते हो।

हम आपसे प्रश्न पूछेंगे कि जो आपने गायत्री मन्त्र दिया, हम आपसे पूछेंगे, क्या आपने कभी अपने पिताजी को गायत्री मन्त्र करते हुए देखा था आज तक? क्या आपके गुरुदेव गौरकिशोर दास बाबाजी ने आपको गायत्री मन्त्र दिया, *ॐ भूर्भुवः स्वः*, आपको यह मन्त्र दिया किसी ने? जब आपको किसी ने दिया नहीं, आपने कभी किसी को करते हुए देखा नहीं, तो आपने यह नई चीज़ क्यों डाल दी? गौरकिशोर दास बाबाजी क्या जनेऊ डालते थे? क्या भक्तिविनोद ठाकुर, जगन्नाथदास बाबाजी कोई जनेऊ डालते थे? नहीं डालते थे। आपने क्यों डाल दिया?

एक होता है *'सम्यक् प्रदायति इति सम्प्रदायः'*, मतलब जो सम्यक् रूप से प्रदान... यह होता है कि सब कुछ को तहस-नहस कर दिया जो हो रहा था, totally अपने मत-मतान्तर को स्थापित कर दिया, और बस अपने आप को सही prove कर दिया, और सब गलत हैं, एक और मैं सही, और सब मेरे को follow करो। और धन्य हैं ऐसे महानुभाव, जो आँखे बन्द करके उनको follow करते हैं। अरे आपको भगवान् ने आँखें दी हैं, जाकर देखकर तो आओ नवद्वीप में, राधाकुण्ड, वृन्दावन में कैसे गौड़ीय वैष्णव भक्ति कर रहे हैं ५०० साल से! एक बार देख तो लो! देख तो लो एक बार!

वो तो सारा कुछ reject कर दिया। पञ्चतत्त्व मन्त्र कोई कैसे reject कर सकता है.. बताओ...! आपके सिद्ध गुरु, आप कह रहे हो गुरु हैं आपके गौरकिशोर दास बाबाजी। भक्तिविनोद ठाकुर

सिद्ध.... कितना पञ्चतत्त्व मन्त्र का कीर्तन होता होगा कि नहीं होता होगा? क्या हमारे यहाँ कीर्तन नहीं होता पञ्चतत्त्व का? होता है। क्या उनके यहाँ नहीं होता होगा कीर्तन गौरकिशोर दास बाबाजी या भक्तिविनोद ठाकुर के यहाँ? कितनी बार होता होगा! आपने नहीं सुना था? सुना था! फिर भी आपने उसे reject कर दिया। क्यों???

किसी भी सम्प्रदाय में चले जाओ, दीक्षा होती है उसे क्या बोला जाता है? वैष्णवी दीक्षा। आपने ब्राह्मण दीक्षा बना दिया! भई क्यों? क्यों?

और सीधा-साधा अर्थ है हरे कृष्ण महामन्त्र का कि राधा-कृष्ण की सेवा में हम लगना चाहते हैं, 'हरे' मतलब 'राधारानी', 'कृष्ण' मतलब 'कृष्ण'। तो राधा-कृष्ण की हम सेवा में अपने मञ्जरी स्वरूप से लगना चाहते हैं। महाप्रभु यही देने आये हैं रस, जो कभी भी अर्पित नहीं किया गया था। क्योंकि सख्य रस, गोपीभाव तो चण्डीदास, विद्यापति, सब गोपीभाव पहले ही follow कर रहें थे। सख्य रस तो पहले भी चल रहा था। महाप्रभु देने ही एक पथ– राधाकृष्ण की सेवा देने आये हैं और वह दे रहे हैं। और हरे कृष्ण महामन्त्र का मतलब ही यही है। तो आपने उसको भी सब reject कर दिया, बोलते हो, 'O Mother Harā! Engage me in Your Kṛṣṇa's service?' हरे कृष्ण महामन्त्र का मतलब ही आपने बदल दिया।

सब कुछ... जिससे सिद्धि अनेकों सिद्ध महात्माओं ने प्राप्त की, आपने सारी practices को हटा दिया और सब चीज़ों में अपना मत-मतान्तर स्थापित कर दिया। चलिये आपने किया तब भी कोई समस्या नहीं, कम से कम अपने मन्दिर के अन्दर तो ऐसे व्यक्तियों को मत रखो जिनको आप ही गलत मानते हो! हम तो नहीं कह रहे वे गलत हैं। आप कह रहे हो कि वे सही हैं, पर उनकी बात मैं एक नहीं मानूँगा! हम कहते हैं, चलो मान लो आपको सब कुछ गलत लग गया... कम से कम उनकी photo मन्दिर में तो मत रखो। जो व्यक्ति बातें ही सारी गलत कर रहे हैं, उनकी photo कोई मन्दिर में रखता है?

आप कहते हो शिक्षा परम्परा है, अरे एक शिक्षा बता दो जो उनकी मान रहे हो! सारी शिक्षायें उनकी reject कर रहे हो आप। आप कहते हो, 'मेरी शिक्षा परम्परा है'। शिक्षा परम्परा तो

आपकी है ही नहीं, क्योंकि आप तो सभी की शिक्षा के विपरीत चल रहे हो। आप तो तिलक भी नहीं लगाते जो आपके गुरु ने आपको दिया।

और अपराध यहीं पर क्षमन नहीं हो रहा। जो अपनी परम्परा बनाई है आपने मन्दिर में या आप जो भक्तिविनोद ठाकुर की, गौरकिशोर दास बाबाजी की photo लगाते हो, उसमें उनको पीला तिलक और पीली तुलसी पत्ती डाल दी। क्या भक्तिविनोद ठाकुर, गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज आपकी तरह पीला तिलक लगाते थे? आप यह बोलना चाहते हो? कोई अपराध की कोई सीमा होती है! गुरु शिष्य को तिलक देते हैं या शिष्य गुरु का तिलक बदल देता है? आपके मन्दिर के अन्दर गौरकिशोर दास बाबाजी का तिलक पीला है और आपके जैसी पीली पत्ती लगी हुई है। गौरकिशोर दास बाबाजी ने एक बार भी पीला तिलक नहीं लगाया कभी! भक्तिविनोद ठाकुर को आपने तिलक लगाते हुए भी नहीं देखा था कभी? क्या आपकी तरह पीला तिलक लगाते थे। ऐसा पत्ती वाला लगाते थे? हमारे जैसा तिलक लगाते थे। जगन्नाथदास बाबाजी का भी आपने तिलक बदल दिया...एक और सिद्ध महात्मा...उनका तिलक भी आपने पीला कर दिया। और आपको follow करने वाले तो ignorant हैं, उनको तो सत्य मालूम नहीं है। तो हम उनको कहेंगे, आप थोड़ा बुद्धि का प्रयोग करो, जगन्नाथदास बाबाजी महाराज की समाधि है नवद्वीप में, जाकर देखो समाधि पर कैसा तिलक है उनका! देखो न...!

नित्यानन्द त्रयोदशी पर तो लोग fasting रखते हैं, गौर पूर्णिमा पर आपके यहाँ fasting रखते हैं। किसी को यह भी पता है कि अद्वैत सप्तमी पर भी fasting होती है? ये basic बातें भी नहीं पता। क्यों? क्योंकि आपने जानबूझ कर छिपायी हैं। आपको तो यहाँ तक कि तीन प्रभु हैं, यह भी नहीं पता, तो fasting का कैसे पता होगा? आपके यहाँ तो दो ही प्रभु हैं, गौर और निताइ। तीसरे प्रभु अद्वैताचार्य हैं।

अद्वैत, ये आचार्य हैं?

उनका नाम आचार्य है।

जिस प्रकार से अनंग मञ्जरी, मञ्जरी नहीं है ब्रजलीला में, वो गोपी हैं, नाम में मञ्जरी हैं। अद्वैताचार्य नाम में आचार्य हैं, हैं तो प्रभु! Basic चीज़ें नहीं पता, ये basic चीज़ें कि तीन प्रभु होते हैं, इनको ऐसे भोग लगता है।

तीन प्रभु होते हैं, यह ही नहीं बताया कभी। मतलब, यह भी कोई छिपाने की बात है? Iskcon, Gaudiya Math में किसी को नहीं पता कि तीन प्रभु हैं। Basic knowledge नहीं पता। Iskcon, Gaudiya Math में किसी को नहीं पता कि हमारे दो स्वरूप होते हैं। एक ब्रज में और एक नित्य नवद्वीप में। यह भी नहीं पता किसी को। आपके पिताजी ने आपको यह तो बताया होगा न कम से कम कि दो स्वरूप होते हैं या यह भी नहीं बताया? आपके गुरुदेव ने यह तो बताया होगा, गौरकिशोर दास बाबाजी ने कि हमारे दो स्वरूप होते हैं या उन्होंने ये भी नहीं बताया? आपने न देखा, न कभी सुना, कान बंद, आँखें बंद करके ही आप गुरुदेव और पिताजी के पास थे हमेशा? मेरी आँखें बंद, मेरे कान बंद, न मैं पिताजी की कोई बात सुनता हूँ, न देखता हूँ। और उनको शिक्षा गुरु के रूप में भी डालता हूँ अपनी गुरु परम्परा में। कमाल है! आश्चर्य है! आश्चर्य उन पर है जो follow करते हैं। और हमारी बात सुन कर, अगर फिर भी कोई वहाँ पर टिक गया, धिक्कार है आपकी बुद्धि पर! Why i am following anyone blindly?

और यह देखा जाये, तो कितनी बड़ी cheating है कि किसी को पता न चले कि आपने सब कुछ ऊट-पटांग कर दिया है, तो जो उस समय के famous सिद्ध महात्मा थे, गौरकिशोर दास बाबाजी, जगन्नाथदास बाबाजी और भक्तिविनोद ठाकुर... तीनों को अपनी परम्परा में लाकर डाल दिया है। एक बात उनकी नहीं मान रहे... एक बात... एक बात उनकी नहीं मान रहे। आप हटा दो इन तीनों को हम देखते हैं कि कौन आपके पास आता है? वो पूछेंगे न, भाई! तुम किसको follow रहे हो?

नाम के लिये बोल रहे हो, हम इनको follow कर रहे हैं। आप बताओ, क्या follow कर रहे हो आप उनका, बताओ हमें! हम बताते हैं, वो क्या करते थे, क्या करते आ रहे हैं अब तक उनकी परम्परा में सब। क्या follow कर रहे हो? कर रहे हो, तो बिल्कुल उनकी शिक्षा परम्परा में तो कम से कम हो। आप तो उनका सब reject कर रहे हो। उनका पञ्चतत्त्व मन्त्र आपसे

नहीं होता, उनका भोग लगाना भी आपसे नहीं होता। किसी भी सम्प्रदाय में चले जाओ... रामानुज सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय... हर एक कोई आपको बोलेगा, वैष्णवी दीक्षा होती है, वैष्णव बनाने के लिये। भगवान् के भक्त, विष्णु के भक्त, कृष्ण के भक्त को वैष्णव बोला जाता है। आपने वैष्णवी दीक्षा भी बदल दी। ब्राह्मण दीक्षा कर दी। ये ब्राह्मण दीक्षा क्या होता है?

क्या जगन्नाथदास बाबाजी जनेऊ डालते थे? बताओ! क्या गौरकिशोर दास बाबाजी जनेऊ डालते थे? नहीं। तो आप क्यों डालते हो भाई? आपके पिताजी जनेऊ डालते थे? बिल्कुल नहीं। Why you do, What you do? Please tell us. Answer to anything.

आप बोलेंगे, आप हमें ये सब क्यों बता रहे हो? भाई! हमारे गुरुदेव ने हमें यह सेवा दी है। वास्तविक मार्ग जो है, लुप्त होता जा रहा है। उन्होंने जाने से पहले हमें सेवा दी थी कि इस वास्तविक मार्ग की रक्षा करना। हम रक्षार्थ ये सब कर रहे हैं। प्रामाणिक सम्प्रदाय लुप्त न हो जाये आप लोगों की वजह से। हम न हों, तो हमें लगता है कि ये लुप्त प्राय ही है लगभग। आपने सिर्फ अपना एक agenda चलाने के लिये सब कुछ किया। बड़े-बड़े सिद्ध-महात्मा present time के... उनको अपनी परम्परा बोल कर डाल दिया। सिर्फ़ अपना agenda चलाने के लिये... कि हमने हरिनाम प्रचार करना है... ये सब करना है। सिर्फ agenda चलाने के लिये सब कुछ किया। This is cheating of the highest order!

गुरु का तिलक बदल दिया। गुरु आपका तिलक बदलेंगे या आप गुरु का तिलक बदलोगे? बोलते हो, मैंने गुरु से संन्यास ले लिया है, गुरु की photo से। और धन्य हैं आपके followers जो आपकी इन बातों को मान भी लेते हैं। उनको यह भी दिमाग में नहीं आता कि मेरे गुरु गौरकिशोर दास बाबाजी जो थे, वो बाबाजी थे। वो किसी को संन्यास देंगे? वो तो बाबाजी वेश देंगे न, वो संन्यास कैसे दे देंगे? वो saffron कपड़ा कैसे दे देंगे? और कितनी blind following हो सकती है! थोड़ा तो दिमाग हो या बिल्कुल ही blend है आपका दिमाग... जो followers हैं।

जैसे हम भी पहले Iskcon में थे। हमें भी जब सत्यता पता चली, उसी क्षण हमने छोड़ दिया। और जिसको भी वास्तव में ज्ञान हो जाये, पता चल जाता है कि ये तो total chaos है, total खिचड़ी है। आप जवाब दो कि आपने ये प्रणाम मन्त्र गुरुओं के क्यों शुरु किये? आप जवाब दो हमें। पहले तो कभी नहीं थे, किसी के नहीं थे। क्या भक्तिविनोद ठाकुर, आपके पिताजी ने कभी यह बताया कि मेरे गुरु का यह प्रणाम मन्त्र है और मैं करता हूँ... बताया कभी? आपके गुरु ने कभी बोला कि बेटा! मैं तुम्हें दीक्षा दे रहा हूँ, तुमने भी यह प्रणाम मन्त्र करना है मेरे गुरु का? नहीं।

आप बोलते हो, कि प्रभुपाद का यह प्रणाम मन्त्र है। अच्छा! भक्तिसिद्धान्त जी का यह प्रणाम मन्त्र है। अच्छा! गोपाल कृष्ण महाराज हो, जय पताका महाराज हो, इनके ये प्रणाम मन्त्र हैं। अच्छा! कभी यह दिमाग में नहीं आया कि पूछो, भक्तिविनोद ठाकुर कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे? या गौरकिशोर दास बाबाजी कौन सा प्रणाम मन्त्र करते थे? तो प्रणाम मन्त्र चार-पाँच ही हैं? उससे पहले कोई नहीं है प्रणाम मन्त्र! कमाल है! आश्चर्य! आपकी बुद्धि को! आश्चर्य है आपकी blind following! आप धन्य नहीं हो, आप सबसे अधन्य हो।

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में आकर भी वास्तविक मार्ग से च्युत हो गये। आप तो उस व्यक्ति को follow कर रहे हैं, भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर को, जो किसी को भी follow नहीं कर रहे... न अपने पिताजी को, न अपने गुरुदेव को, एक भी बात follow नहीं कर रहे। और आप उनको follow कर रहे हो।

क्यों? क्यों, क्योंकि कलियुग का लक्षण है, 'दुर्भाग्यशाली'। घोर कलियुग! घोर कलियुग! गुरु ने तुम्हें तिलक दिया, तुमने गुरु का तिलक बदल दिया photo में। पिताजी का तिलक बदल दिया। सिद्ध जगन्नाथदास बाबाजी, जो डेढ़ सौ साल रहें, सारी दुनिया जानती है। नित्यानन्द परिवार से हैं, सारी दुनिया जानती है। तुमने photo में जगन्नाथदास बाबाजी महाराज का तिलक भी बदल दिया। कमाल है! किसी को नहीं छोड़ा अपराध करने में, सबके प्रति अपराध, भक्तिविनोद ठाकुर के प्रति अपराध, गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के प्रति अपराध, गुरुदेव के प्रति अपराध, सिद्ध जगन्नाथदास बाबाजी के प्रति अपराध। तीनों के तिलक बदल दिये।

उन्होंने पीली पत्ती और पीला तिलक लगा दिया, क्यों भाई? और blind following? उनको नज़र नहीं आता? दिमाग नहीं है? वो सोचते हैं कि सभी पीला तिलक लगाते थे। अच्छा? Iskcon, Gaudiya Math को छोड़कर देख लो, एक व्यक्ति पीला तिलक नहीं लगाता। एक व्यक्ति... एक... एक व्यक्ति... गौड़ीय सम्प्रदाय का... एक व्यक्ति पीला तिलक नहीं लगाता। और पीली तुलसी पत्ती, यह कोई भी नहीं लगाता।

यह आपको तुलसी पत्ती नज़र आ रही है हमारे यहाँ? गौरकिशोर दास बाबाजी कैसा तिलक लगाते थे, आप जानना चाहते हो? जाओ राधाकुण्ड, रघुनाथदास गोस्वामी की समाधि देखो, वहाँ देखो तिलक, ऐसा लगा हुआ है... circular तिलक, वो होता है अद्वैत परिवार का। भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने मनमाना करके तहस-नहस कर दिया पूरे गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय को। आप लोग जितने... तीस-चालीस-पचास साल... जो भी सुन रहे हैं, सुनेंगे इस video को... इतने साल तो आपने खराब कर दिया, अपने बचे हुए साल को, अपने ऊपर रहम खाकर गौड़ीय वैष्णव में सही जगह पर आश्रय लो। हम कभी नहीं कह रहे कि हमारे यहाँ आश्रय लो। हम कह रहे हैं कि किसी प्रामाणिक परिवार में आश्रय लो। नित्यानन्द परिवार में आश्रय ले लो, अद्वैत परिवार में आश्रय ले लो, नरहरि सरकार ठाकुर परिवार में आश्रय ले लो, गदाधर पण्डित, श्रीवास पण्डित, नरोत्तम परिवार... जो आपकी इच्छा हो।

कम से कम भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से अपना पिण्ड छुड़ाओ, उन्होंने सब कुछ तहस-नहस कर दिया है गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का। पञ्चतत्त्व मन्त्र हो, संन्यास हो, जनेऊ... क्या है ये सब?? भोग लगाना नहीं आता पचास-पचास साल बाद भी भक्तों को! इससे दुर्वास्था क्या होगी? इतना भी नहीं पता कि तीन प्रभु होते हैं... अरे भाई? ये भी कोई knowledge नहीं होनी चाहिये कि तीन प्रभु होते हैं। इससे basic knowledge हम क्या बोलें? ये तो कखारा है। कखारा मतलब ABCD of Gauḍīya Vaiṡṇavism. आपके बच्चे स्कूल पढ़ने जाते हैं, little flowers... KG। उनको ABCD न सिखायी जाये सही रूप से, तो आगे के वो अक्षर... कभी सही मात्रा बना पायेंगे? आपको ABCD नहीं सिखायी गयी कि तीन प्रभु होते हैं, ऐसे भोग लगता है, ऐसे मंगल आरती होती है, तो आगे की बात आप क्या सीख पाओगे कभी सही?

5

ISKCON ke Dīkṣā Guru ka tyāga ~ Aparādha?!?

भक्त– महाराज जी ! कानपुर से माधवकृष्ण दास जी हैं, Iskcon के ही भक्त हैं। वह प्रश्न पूछ रहे हैं कि जैसे अब पता चल रहा है कि Iskcon में काफी चीज़ें गलत हैं। जैसे भोग अर्पण की विधि गलत है, पञ्चतत्त्व प्रणाम मन्त्र गलत है, गेरुआ वस्त्र गलत है, वह नहीं दिया जाता। गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में संन्यास नहीं दिया जाता, पता चला कि यह भी गलत है जो दिया जा रहा है; और जो गुरु प्रणाम मन्त्र है, यह भी पता चला कि यह भी नहीं होता है। तो पता चल रहा है कि काफी चीज़ें गलत हैं, जो प्राचीन परम्पराओं के अनुसार नहीं हैं। उनका प्रश्न यह है कि जो वहाँ पर already दीक्षित हैं, जो already दीक्षा ले चुके हैं, यदि वे Iskcon छोड़कर किसी नित्यानन्द परिवार में या अद्वैत परिवार में या अन्य किसी प्रामाणिक सम्प्रदाय में दीक्षा लेते हैं, तो क्या उनका अपने Iskcon के गुरु के प्रति अपराध होगा या नहीं ? कृपया करके मार्गदर्शन करें !

महाराज जी– इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं कि जब उन्हें सत्य पता चल रहा है कि Iskcon मे काफी चीज़ें सही नहीं हैं, तो क्या वहाँ से वे छोड़कर यदि वास्तविक परम्परा में दीक्षा लेंगे, अद्वैत परिवार की या नित्यानन्द परिवार की, तो गुरु त्याग का अपराध लगेगा या नहीं लगेगा ?

प्रश्न बिल्कुल अच्छा है। जब हमनें सन् २००९ में Iskcon छोड़ा था, तो हम अपने गुरु श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज के पास जब सब भक्तों को लेकर गये थे, तो यही प्रश्न हमने बाबाजी से स्वयं पूछा था। जब हम गये थे, तो करीब डेढ़-दो सौ भक्त भी Iskcon छोड़कर गये थे और राधाकुण्ड में बाबाजी का आश्रय लिया था। तो श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज से पूछा था कि Iskcon से दीक्षित होने के बाद भी यदि हम आपका आश्रय लेंगे, तो क्या हमें गुरु त्याग का अपराध लगेगा या नहीं ?

श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज का जब सन् २०१८ में तिरोभाव हुआ था, तो एक सिद्ध महात्मा ने श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज को देखकर कहा था–

'न भूतो न भविष्यति।'

ऐसे सिद्ध महात्मा न आज से पहले कभी हुए हैं, न आज के बाद कभी होंगे। पूरी पृथ्वी पर वे एकमात्र थे, जो शास्त्रों के इतने प्रकाण्ड पण्डित थे! सब शास्त्र कण्ठस्थ, और सारे सिद्ध महात्मा, भजनान्दी महात्मा, जो तीन-तीन लाख नाम, चार-चार लाख नाम रोज़ करते हैं, वे लोग भी श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज के ग्रन्थ पढ़ते हैं। इस पूरी पृथ्वी पर सभी उन्हीं के ग्रन्थ पढ़ते हैं, तो उनसे ज़्यादा ज्ञानवान् गौड़ीय वैष्णव सन्त किसी ने भी अपनी आँखों से नहीं देखा! अभी भी बूढ़े से बूढ़े लोग, जितनी भी उम्र है सबकी, वे कहते हैं, इनसे ज़्यादा ज्ञानवान् संत हमने कभी नहीं देखा!

यही प्रश्न हमने भी बाबाजी महाराज से पूछा था कि Iskcon के गुरु को छोड़कर, जब हम आपका आश्रय लेंगे, आपसे दीक्षा लेंगे, तो गुरु त्याग का अपराध लगेगा या नहीं लगेगा?

तो बाबाजी महाराज ने बहुत सरल भाषा में कहा– त्याग का तो प्रश्न तब उठता है, जब पहले ग्रहण किया गया हो! जब कोई चीज़ ग्रहण ही नहीं हुई, तो उसका त्याग कैसे होगा?

बाबाजी महाराज ने कहा कि त्याग तो तब होगा, जब ग्रहण हुआ हो!

मतलब, यदि जब तक आप किसी प्रामाणिक परम्परा से जुड़े ही नहीं हैं, तो उसका त्याग कैसे हुआ?

गुरु पहले किसी प्रामाणिक परम्परा से जुड़े होने चाहिये। जैसे किसी मन्दिर में गौरकिशोर दास बाबाजी, जगन्नाथदास बाबाजी और भक्तिविनोद ठाकुर एक ही परम्परा में रखते हैं, तो वह कोई प्रामाणिक परम्परा ही नहीं हुई क्योंकि भक्तिविनोद ठाकुर नित्यानन्द परिवार के हैं, गौरकिशोर दास बाबाजी अद्वैत परिवार के हैं।

अब आप सोचेंगे कि यह परिवार क्या होता है ?

देखिये, हम संक्षिप्त में बताते हैं। गौड़ीय वैष्णव मतलब हमारी गुरु परम्परा द्वारा हमें महाप्रभु की सेवा में लगाया जाता है; राधा-कृष्ण की सेवा में भी गौड़ीय वैष्णव का एक स्वरूप होता है,और महाप्रभु की भी सेवा में भी।

अब जैसे महाप्रभु के पार्षद हैं– नित्यानन्द, अद्वैताचार्य, गदाधर पण्डित, श्रीवास पण्डित; तो ये सब महाप्रभु की direct सेवा में जुड़े हुए हैं। वक्रेश्वर पण्डित, श्रीवास पण्डित, गदाधर पण्डित, ये सब भगवान् की direct सेवा मे जुड़े हुए हैं। इन्होंने अन्यों को दीक्षा दी। नित्यानन्द प्रभु ने जिनको दीक्षा दी, वे नित्यानन्द परिवार के अन्तर्गत आ गये। अद्वैत प्रभु ने जिनको दीक्षा दी, वे अद्वैत परिवार के अन्तर्गत आ गये। गदाधर पण्डित ने जिनको दीक्षा दी, वे गदाधर परिवार के अन्तर्गत आ गये।

तो सभी परिवार ultimately किसकी सेवा में लगे हैं ? भगवान् गौराङ्ग महाप्रभु जी की।

तो यदि कोई अद्वैत परिवार में है, उनके गुरु अद्वैत परिवार के हैं। जैसे मान लो, गौरकिशोर दास बाबाजी हैं, उनके गुरु अद्वैत परिवार के हैं। जो प्रामाणिक अटूट परम्परा में हैं, अगर वे लोग गुरु का त्याग करेंगे, तो निश्चित् रूप से गुरु त्याग का अपराध लगेगा।

परन्तु जो आपने परम्परा बनायी हुई है–
एक में गौर किशोर बाबाजी हैं अद्वैत परिवार के,
फिर जगन्नाथदास बाबाजी हैं नित्यानन्द परिवार के; यह कोई परम्परा नहीं है !

कैसे पता चले कि हम जिस परम्परा से जुड़े हैं, वह प्रामाणिक है या अप्रामाणिक ? Bonafide है या नहीं ?

सबसे पहले हमें यह देखना होगा, हमारी जो परम्परा है, क्या वह किसी परिवार से जुड़ी है या नहीं ? भगवान् के धाम में उनकी सेवा हम कौन से परिवार के अन्तर्गत करेंगे ?

आप गौराङ्ग महाप्रभु के नित्य सेवक बनना चाहते हो?
हाँ!
कैसे बनोगे?

आपको एक प्रामाणिक परिवार से जुड़ना होगा। तो यदि आप नित्यानन्द परिवार से जुड़े हो, ज़रूरी नहीं कि आपको नित्यानन्द परिवार से जुड़ना होगा, आप अद्वैत परिवार से जुड़ो, आप गदाधर पण्डित से जुड़ो, श्रीवास पण्डित, नरोत्तम परिवार, जिससे मर्ज़ी जुड़ो, वह अटूट परम्परा होनी चाहिये। तो उसी chain में आप भगवान् के धाम में भी सेवा करोगे। सोओगे भी वहीं पर। नित्यानन्द परिवार की परम्परा में हो, तो वहाँ पर सोओगे।

नित्य नवद्वीप में रात्रि में जब शयन होता है, संकीर्तन होता है, तो नित्यानन्द प्रभु का जो रहने का स्थान हैं, जगन्नाथदास बाबाजी उसके साथ में निवास करते हैं। और सुबह भी जब उठते हैं, जब प्रातः लीला होती है, स्नान इत्यादि करके, जगन्नाथदास बाबाजी अपनी गुरु परम्परा के साथ मिलकर पहले भगवान् नित्यानन्द के पास जाते हैं और पूरा नित्यानन्द परिवार इकट्ठा होकर महाप्रभु के दर्शन करने के लिये जाता है। तो जगन्नाथदास बाबाजी पूरे नित्यानन्द परिवार के साथ जाते हैं, महाप्रभु के दर्शन के लिये।

उसी प्रकार से मान लो, गौरकिशोर दास बाबाजी हैं, तो वे रात को शयन कहाँ करते हैं? नित्य नवद्वीप में श्रीवास आँगन में नित्य संकीर्तन होता है। गौरकिशोर दास बाबाजी श्रीवास आँगन में कहाँ शयन करते हैं? अद्वैत प्रभु के साथ, श्रीवास आँगन में। और सुबह उठते हैं, फिर जब स्नान इत्यादि करके आते हैं, तो वे अपनी गुरु परम्परा के साथ पहले अद्वैताचार्य जी के पास जाते हैं। वे नित्यानन्द प्रभु के पास नहीं जाते। फिर वे सब अद्वैताचार्य के पास जाकर, अद्वैताचार्य के आनुगत्य में, सब महाप्रभु के पास जाते हैं, महाप्रभु के दर्शन और सेवा के लिये।

तो यदि आप सोचो कि अगर आपकी परम्परा में गौरकिशोर दास बाबाजी हैं, भक्तिविनोद ठाकुर हैं, जगन्नाथदास बाबाजी हैं, तो आप कौन से परिवार से जुड़कर महाप्रभु की सेवा में जाओगे?

क्योंकि गौरकिशोर दास बाबाजी की परम्परा में जगन्नाथदास बाबाजी नहीं हैं। भक्तिविनोद ठाकुर की परम्परा में गौरकिशोर दास बाबाजी नहीं हैं। तो आप कौन सी परम्परा में जुड़ोगे?

जब तक आपको परिवार ही नहीं पता, तो प्रामाणिक परम्परा ही नहीं है! यह अच्छे से समझ लो! प्रामाणिक परम्परा है या नहीं, पहले जानो कौन सा अटूट परिवार है। जो Iskcon में हैं– भक्तिविनोद ठाकुर, गौरकिशोर दास बाबाजी, यह तो अटूट परिवार कोई एक हुआ ही नहीं, अलग-अलग परिवार के बड़े-बड़े महात्माओं को डाल दिया। तो निश्चित् रूप से जो परम्परा है, वह प्रामाणिक है ही नहीं!

जैसे अनन्तदास बाबाजी ने कहा था, यदि प्रामाणिक परम्परा ही नहीं है, तो गुरु प्रामाणिक परम्परा के साथ जुड़ा ही नहीं है, तो वह गुरु हुआ ही नहीं! वे संस्थागत गुरु हो सकते हैं, प्रामाणिक परम्परा के गुरु नहीं हैं। गुरु त्याग का अपराध तब लगता है, जब आप प्रामाणिक परम्परा से जुड़े हो, और गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत जब तक आप प्रामाणिक परिवार से नहीं जुड़े, तो प्रामाणिक परम्परा से जुड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता!

इसलिये श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज ने कहा कि ग्रहण तो हुआ ही नहीं, तो त्याग कैसे होगा?

6

Gauḍīya Vaiṣṇavism & Iskcon

भक्त– एक भक्त हैं दीपक, कुछ समय पहले ही iskcon से जुड़े हैं, वो बता रहे हैं की iskcon में बोला जाता है कि गौड़ीय वैष्णव भक्ति सिर्फ iskcon के अन्दर ही है और कहीं नहीं है। तो उनका प्रश्न यह है, क्या वो सही बात बोल रहे हैं? क्या इसककों के आलावा और कहीं गौड़ीय वैष्णव भक्ति नहीं होती? कृपया कर के मार्ग दर्शन करें महाराज जी।

महाराज जी – आप यह देखो कि जब तक Iskcon Gaudiya Math नहीं आया था...समझ लो कि...दूसरे angle से समझो। मान लो, भक्तिविनोद ठाकुर की family इस पृथ्वी पर नहीं थी, तो क्या Gauḍīya Vaiṣṇavism नहीं था? भक्तिविनोद ठाकुर के बेटे हैं भक्तिसिद्धान्त सरस्वती। उनके शिष्य हैं प्रभुपाद। मान लो, यह २ मिनट के लिये मान लो... ये नहीं हैं।

तो Gauḍīya Vaiṣṇavism क्या है फिर? है ही नहीं क्या? मतलब एक परिवार है, तो Vaiṣṇavism...सम्प्रदाय है, नहीं तो गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय ही नहीं है? यह कोई बुद्धिमता की बात है? हमें कोई...किसी से कोई न द्वेष है, न राग है, क्योंकि तत्त्व आचार्य के रूप में....ये हमें मार्ग प्रशिक्षित करना पड़ेगा कि क्या सही है और क्या गलत है।

अरे भाई! कोई family में अगर आप नहीं जुड़ रहे, तो क्या आप गौड़ीय वैष्णव नहीं बन सकते? आप सिर्फ यह जानो जब Iskcon Gaudiya Math नहीं था, तो Gauḍīya Vaiṣṇavism का कैसे पालन होता था? उसमें क्या...? बस वही पथ को हमने follow करना है।

एक family ने कुछ अलग-अलग बातें बतायी। मान लो...हमें...कोई बात नहीं...हमने तो गौड़ीय वैष्णव बनना है न?

और जो बात भी बोल रहे हैं कि हम प्रभुपादजी को जानते हैं जी...हम भक्तिविनोद ठाकुर को जानते हैं...गौरकिशोर दास बाबाजी को जानते हैं...वो हमारी परम्परा हैं...। अच्छा! आप

वास्तव में उनको follow करते हो क्या? गौरकिशोर दास बाबाजी को, भक्तिविनोद ठाकुर जी को, आपने परम्परा में रखा हुआ है इनको...रखा हुआ है न? भक्तिविनोद ठाकुर, गौरकिशोर दास बाबाजी, और जगन्नाथदास बाबाजी महाराज...ये आपने परम्परा में रखा है...आप कहते हो। आपकी परम्परा मतलब...आप इनको follow करते ही होंगे? हम आपसे सरल प्रश्न पूछते हैं? क्या वही मन्त्र करते हो जो ये करते थे? नहीं, हम कुछ अलग मन्त्र करते हैं। हम आपको बता रहे हैं...हम वही मन्त्र करते हैं जो ये करते थे। तो follow कौन कर रहा है...आप या हम? हम follow कर रहे हैं।

अच्छा क्या आप वही तिलक लगाते हो जो वे लगाते थे? नहीं। हम तो वही तिलक लगाते हैं जो वे लगाते थे। Follow कौन कर रहा है...आप या हम? हम follow कर रहे हैं।

अच्छा क्या ये मंगला आरती जो वो करते थे...आरती जो वो करते थे ठाकुर जी की, क्या आप वैसे ही करते हो जैसे ये करते थे? नहीं। आप तीनों प्रभु की करते हो आरती? उसके बाद गदाधर श्रीवास को दिखाते हो? नहीं न! हम तो वैसे ही करते हैं। तो follow आप कर रहे हो या हम कर रहे हैं इनको? गौरकिशोर बाबाजी को follow कौन कर रहा है? भक्तिविनोद ठाकुर को follow कौन कर रहा है? जगन्नाथदास बाबाजी को follow कौन कर रहा है? हम कर रहे हैं या आप कर रहे हैं? हम कर रहे हैं।

अच्छा, ये कपड़े डालते हैं सफेद। हम भी सफेद डालते हैं। आप लाल डालते हो। तो इनको follow कौन कर रहा है? आप या हम? हम follow कर रहे हैं। हम तो सफेद डालते हैं।

अच्छा, ये लोग काला तिलक लगाते थे। यह कौन सा तिलक है? यह भी काला है। आपका कौन सा है? पीला। तो आप इनको follow कर रहे हैं या हम कर रहे हैं? यह भी हम ही follow कर रहे हैं।

अच्छा भोग ये लगाते थे तीनों प्रभु को और ब्रज में पहले कृष्ण को, फिर राधा को, फिर मञ्जरियों को। हम भी ऐसे ही करते हैं। क्या आप भी ऐसे ही करते हो? नहीं। आप यह भी follow नहीं करते? नहीं। हम यह भी follow करते हैं।

सारी बातें तो हम follow कर रहे हैं उनकी। आप एक भी follow नहीं कर रहे। हम कहते हैं...हमारी परम्परा में भी नहीं हैं। आप कहते हो हमारी परम्परा में हैं। यह कौन सी परम्परा का followership है?

भाई! Follow का मतलब होता है कि एक चीज़ भी ऐसी नहीं होगी जो उनकी की हुई बात को काटूँगा। वो कभी भी गायत्री नहीं करते थे– *'ॐ भूर्भुव: स्व:.... '* आप करते हो? हाँ, करते हो। हम तो नहीं करते। तो follow कौन कर रहा है उनको...आप या हम? गायत्री के मामले में भी हम follow कर रहे हैं उनको।

अरे! वो हमारी परम्परा में नहीं हैं, तब भी हम follow करते हैं...हमारा तो...हम तो एक ही जाति के हैं सब लोग। हम तो एक पथ follow करेंगे ही सही। क्योंकि हम वही follow कर रहे हैं जो सनातन काल से follow हो रहा है। हमारा कोई invent है ही नहीं कुछ। न हमारा जनेऊ है। कोई जनेऊ डालते थे जगन्नाथदास बाबाजी या गौरकिशोर दास बाबाजी? नहीं। हम डालते हैं? नहीं। तो आप क्यों डालते हो?

वो अभिषेक राधाष्टमी पर केवल राधारानी का करते हैं। आप किनका करते हो? राधा कृष्ण दोनों का करते हो। आप follow कर रहे हो या हम कर रहे हैं follow? जन्माष्टमी पर वो केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे, तीनों का नाम...वो मतलब तीनों...गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज, जगन्नाथदास बाबाजी महाराज, भक्तिविनोद ठाकुर...ये तीनों जन्माष्टमी पर केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे। इनकी जो परम्परा है...इनके पुत्र ललिता प्रसाद ठाकुर, ये भी केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे। हम भी वही करते हैं।

आप भी यही करते हो? नहीं। आप दोनों का करते हो। तो follow कौन कर रहा है? आप या हम? हम कर रहे हैं।

वस्त्र जो हैं, जो गुरु द्वारा प्रदत्त हैं...। हमारे गुरु ने हमें सफेद वस्त्र दिये। तो हम सफेद डालेंगे। आपके किसी गुरु ने आपको लाल वस्त्र दिये? भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से कौन पूछे कि आपको लाल वस्त्र किसने दिये? तिलक आपको पीला तिलक किसने दिया? जनेऊ आपको

किसने दिया? जन्माष्टमी पर किसने कहा कि राधा कृष्ण का अभिषेक कर दो आप? आपको किसने कहा कि राधाष्टमी पर राधा कृष्ण का अभिषेक कर दो?

नित्यानन्द त्रयोदशी पर दोनों का अभिषेक कर दो...किसने कहा? किसने कहा कि पीला तिलक लगाना है? काला खराब है? किसने कहा कि हमारे यहाँ सिर्फ नित्य नवद्वीप और नित्य ब्रज की उपासना है...किसने कहा? किसने कहा कि सीताराम-लक्ष्मण-हनुमान के विग्रह को बीच में लाओ, नृसिंह भगवान् के विग्रह को बीच में ले आओ...किसने कहा? आपके गुरु ने कभी किया? उन्होंने आपको कहा यह करने के लिये? आप क्यों कर रहे हो? हम तो नहीं करते। तो हम इनको follow कर रहे हैं या आप कर रहे हो?

Follow करने का मतलब है...पहले जानना...। तभी तो हमने पूछा... तुमने कहा हम प्रभुपाद को जानते हैं केवल। अरे! प्रभुपाद तो बाद में...वो कर क्या रहे हैं, यह तो जान लो। अच्छा, तुम प्रभुपाद को जानते हो...भक्तिविनोद ठाकुर को भी तो follow करते होंगे? एक बात भी तो आप उनकी follow नहीं करते। एक बात...एक बात...।

जैसे फुमन के लिये लगाया हुआ है परम्परा को अपने Altar में...showcase...showcase परम्परा बनाया हुआ है। नाम की परम्परा है, नाम के लिये डाला हुआ है।

ये कैसी followership है कि न हम भोग उनकी तरह लगाते हैं, न हम आरती उनकी तरह करते हैं, न वस्त्र उनकी तरह करते हैं, न तिलक उनकी तरह लगाते हैं, न गुरुप्रदत्त तिलक, न गुरुप्रदत्त मन्त्र करते हैं, न वो जो पञ्चतत्व मन्त्र करते हैं, वो भी अलग था, जो आप करते हो, वो भी अलग है। एक नयी बात और सुन लो। हम वही करते हैं उनके वाला। जो *'श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द...'* है, ये जगन्नाथदास बाबाजी ये नहीं करते थे, गौरकिशोर दास बाबाजी ये नहीं करते थे, और भक्तिविनोद ठाकुर भी नहीं करते थे। वो क्या करते थे *'श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द श्रीअद्वैतचन्द्र गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।'* वे यह मन्त्र करते थे, हम भी यही करते हैं। Follower आप हो उनके या हम हैं? हमारा तो सब कुछ एक है न। हम एक घर के हैं। सभी एक बात follow करते हैं।

सोचो कैसी परम्परा है कि एक भी बात follow नहीं करते ! और हमारी कैसी परम्परा है...हम Alter में भी नहीं डालते, फिर भी हमारी सारी बातें same हैं। वही तो कह रहे हैं। आप हमें follow मत करो। आप जगन्नाथदास बाबाजी को follow करो क्योंकि उन्होंने कुछ add... subtract...कुछ नहीं किया।

यह सब जो आपको ज्ञान प्राप्त हो रहा है, ये रहस्य है सब। और यह भी नहीं कि हम दे रहे हैं, यह गुरु, गुरुदेव और गौरांग महाप्रभु कि शक्ति द्वारा कार्य संचारित हो रहा है। शक्ति प्रदत है। उनकी शक्ति से सारे कार्य हो रहे हैं। नहीं तो पृथ्वी पर कौन हैं जो यह सब दे। यानि कि हम हैं, जैसे यह mike हैं, mike कुछ बोलता हैं ? mike के द्वारा बुलवाया जा रहा है।

यह गुरु और गौरांग अपने रस-रसस्य हमारे माध्यम से पृथ्वी पर प्रकट कर रहे हैं। सार बात सिर्फ यही है। इसमें हमारा कोई role नहीं है। वो करवा रहे हैं, केवल mouthpiece हैं। करवाने वाले वही हैं केवल।

जब iskcon छोड़ रहे थे , तो वहाँ के एक president थे iskcon के, वो हमसे मिले, उन्होंने हमको बोला, भई ! देखो, आपने पूरे दिल्ली के भक्तो ने मिलकर ४० साल में भी, दिल्ली के सारे भक्तो ने जो ४० साल पुराने हैं, किसी के ६० साल , किसी के ७० साल, तो ३०-४० साल से जो हम प्रचार करा सबने मिलकर, वो तुमने अकेले ने पिछले २-२.५ वर्षो में किया।

यह प्रचार करने कि हमारी कोई इच्छा नहीं थी। ये बात है लगभग June के आसपास सन २००९ कि। हमने वही पर ही छोड़ा था २००९ में iskcon.

और November के अन्दर ही घटना हो गयी। हमने iskcon छोड़ा किसलिए था ? कि हम मधुकरी कर के भीख मांगकर रोटी खाकर जीवन व्यतीत करेंगे और पूरा दिन केवल भजन करेंगे। सिर्फ इसलिए iskcon छोड़ा था, दूसरा कोई कारण नहीं था।

हमारे गुरुदेव ने बोल दिया था कि मन्दिर बनाना है और प्रचार करना है, यह सब। मेरे जाने के बाद मेरे ग्रन्थों का वितरण भी करना है, यह सब आज्ञा दी। उन्होंने पूरा जीवन बिलकुल, जो

विचार शुरू से था कि मधुकरी कर के जीवन जीना है, भीख मांगकर रोटी खाना है, वो सब बदल दिया। तो वही गुरु द्वारा उनकी इच्छा से ही उन्ही के द्वारा उनका कार्य जो वो करवाना चाह रहे हैं, वो सब हो रहा है। और यह होकर रहेगा !

7

Can we directly offer Flowers, Garland to Spiritual Master?

भक्त– महाराज जी ! कुछ भक्तों का प्रश्न यह था कि ऐसा देखने में आया है कि किन्हीं संस्थाओं में... अगर मैं particularly बोलूँ Iskcon के अन्दर देखने में आया है कि directly offer करते हैं... गुरु को Offer करते हैं। तो क्या यह सही है ? शास्त्रीय है या शास्त्रीय क्या चीज़ होनी चाहिये ?

कृपया इसका...

महाराज जी– Direct bhoga...?

भक्त– Direct bhoga, जैसे garland offering है, तो garland लेकर आये और directly गुरु को offer कर दिया।

महाराज जी– आपके दो प्रश्न न इसमें mixed हैं। तो हम आपके इस प्रश्न को अलग-अलग करके उत्तर देते हैं। पहला प्रश्न है आपका कि आप जैसे गुरु पूजा में जाते हैं... देखिये आप हमसे प्रश्न इसलिए पूछ पा रहे हैं कि आपको पता है कि वहाँ पर भी हम 15 वर्ष रहे थे लगभग। वहाँ पर पूरी community को build किया था और हज़ारों लोग जो थे, वो सब follow करते थे। तो वहाँ का पक्ष तो हमें निश्चित् रूप से पता ही है... Iskcon का पक्ष। अब यहाँ पर भी हम लगभग 15 वर्ष से हैं। तो निश्चित् रूप से यहाँ का पक्ष भी पता ही होगा।

हमारे गुरुदेव ने बोला भी है...इसी...जिम्मा दिया है कि इस पक्ष को उनके जाने के बाद...कि सबको प्राप्त हो। तो यह पक्ष भी हमें पता है और वो पक्ष भी पूर्ण रूप से पता है।

तो जब गुरु-पूजा होती है Iskcon में, तो सीधा प्रभुपादजी के चरणों में पुष्प चढ़ा दिये जाते हैं और फूलमाला भी बाज़ार से लाकर सीधा प्रभुपादजी के गले में पहना दी जाती है। तो प्रश्न

है कि क्या यह सही है या गलत है? देखिये, शास्त्रीय उत्तर जानना चाहते हैं, तो हम हैं आपके सामने। अब emotional उत्तर जानना चाहते हैं, तो उसका हमारे जीवन में कोई स्थान नहीं है।

शास्त्रीय उत्तर यह है कि हमने आपको बताया पिछली बार कि भोग कैसे लगता है ब्रज में और नित्य नवद्वीप में। नित्य नवद्वीप में कैसे भोग लगता है? आरती कैसे होती है? आरती होती है नित्य नवद्वीप में पहले महाप्रभु की...वे प्रभु हैं, नित्यानन्द प्रभु की...वे भी प्रभु हैं, और अद्वैताचार्य की... वे भी महाविष्णु हैं...प्रभु हैं। और तीनों की आरती होती है।

क्या हमने बोला कि पञ्चतत्त्व की आरती होती है? तीनों प्रभु की आरती होती है। आरती दी... दी किनको दी जाती है सबसे पहले? गदाधर पण्डित को दी जाती है प्रसादी... direct नहीं। उसके बाद श्रीवास पण्डित, स्वरूप आदि गोस्वामी... फिर इत्यादि-इत्यादि और सबसे अन्त में किनको दी जाती है? गुरुदेव को। क्या दिया जाता है? प्रसादी। तो आप यहाँ गुरु-पूजा कर रहे हैं। यदि आप गौड़ीय वैष्णव हो... आप मान लीजिये नित्य नवद्वीप में हो, तो आप क्या अपने गुरुदेव को सीधा क्या... उनको सीधा माला पहना दोगे? कैसे करोगे? पहले महाप्रभु को माला अर्पण की जायेगी। जो महाप्रभु को फूल दिये जायेंगे और जो प्रसादी फूल हैं, वो गुरुदेव के हाथों में... उनके चरणों मे नहीं दिये जायेंगे फूल। गौड़ीय वैष्णव अपने गुरुदेव के चरणों में कभी फूल नहीं देते हैं।

४० साल से कुछ लोग कर रहे होंगे पर नहीं मालूम है शास्त्रीय ज्ञान, तो निश्चित् रूप से सही तो नहीं हो रहा, और सही नहीं हो रहा, तो निश्चित् रूप से गलत हो रहा है। Save yourself. गुरुदेव को प्रसादी पुष्प, चन्दन दिया जाता है, वो भी उनके हस्त में, या माथे पर चन्दन लगा दिया जाता है। और माला जो होती है, गौर प्रसादी होती है, वो दी जाती है... और यह तो हुई एक बात।

दूसरा...आरती करना। गुरु पूजा में तो पुष्प चढ़ा दिये, माला चढ़ा दी। आरती... आरती कर रहे हैं प्रभुपादजी की... क्या यह सही है या गलत है? शास्त्रीय दृष्टिकोण से लें, तो गौड़ीय वैष्णव कभी किन्हीं गुरु की आरती नहीं करते। आरती किसकी की जाती है? प्रभु की। बोले हम

प्रभुपाद की करेंगे। नहीं... प्रभुपाद की नहीं करनी आरती। आरती प्रभु की करनी है, प्रभुपाद को दे देनी है कर के। प्रभुपाद को दे देनी है न...। अच्छा! कोई भी गुरु हैं, चाहे प्रभुपाद हों... चाहे भक्तिविनोद ठाकुर हों... चाहे जगन्नाथदास बाबाजी हों... शुद्ध भक्त हैं न...। अच्छा, क्या वे गदाधर पण्डित से भी ऊपर हो गये? क्या वे श्रीवास पण्डित से भी ऊपर हो गये? आरती सिर्फ तीन की की जाती है। गदाधर पण्डित की भी आरती नहीं होती है नित्य नवद्वीप में। श्रीवास पण्डित की आरती नहीं होती है नित्य नवद्वीप में, स्वरूप दामोदर गोस्वामी, रामानन्द राय जो ललिता-विशाखा हैं, उनकी भी आरती नहीं होती है।

उनको प्रसादी आरती दी जाती है। पहले महाप्रभु की आरती कर ली...प्रभु की। उसके बाद स्वरूप दामोदर गोस्वामी, जो कि ललिता हैं और सबकी आरती करके अन्त में जाकर गुरुवर्ग के बाद... के बाद जाकर गुरुवर्ग... पूरे गुरुवर्ग को आरती दी जाती है। अन्त में गुरुदेव को प्रसादी आरती दी जाती है...वो भी अन्त में। बहुत पार्षदों को देने के बाद अन्त में गुरुदेव को प्रसादी दी जाती है। गुरुदेव इसी से प्रसन्न होते हैं।

जो वास्तविक गुरु हैं, वे कभी स्वप्न में भी अपनी आरती नहीं करने देंगे और सीधा माला नहीं पहनेंगे जो भगवद् प्रसादी नहीं होगी...जो गौड़ीय वैष्णव हैं। अन्य सम्प्रदायों में जो होता है, होता रहे। हमें अन्य सम्प्रदायों से सरोकार नहीं है। हमें किससे सरोकार है? हमारे गौड़ीय वैष्णव आचार्य किस प्रकार से...। इसलिये तो हमने बताया... जब तक ये ग्रन्थ पढ़ोगे नहीं, तो ABCD भी नही पता चलेगी। जो खोलोगे, लगेगा... अरे! ये भी मैं ठीक नहीं करता। अरे! ये भी मैं ठीक नहीं...। ठीक करोगे कैसे? उदाहरण हम बताते हैं। आपने दसवीं के बाद admission लिया। आपने दसवीं पास की। उसके बाद आपने Medical में admission लिया... किताब एक नहीं पढ़ी Medical की... तो उसका जो operation... कैसे करोगे व्यक्ति का? जो करोगे... गलत काटा-पीटा ही करोगे... गलत ही करोगे... उसका...व्यक्ति का खून हो जायेगा बेचारे का। उसी प्रकार से आपने ग्रन्थ पढ़े नहीं। ये Medical की किताबें हैं। Operation सीधा करने बैठ गये हो। वो भी...सबका हम कल्याण कर देंगे, स्वयं को छोड़कर। तो... Charity begins at home. पहले आप इनका दर्शन करो...ग्रन्थों का। इनको पढ़ो,

सीखो महापुरुषों के चरणों में बैठकर कि भाई ! ये क्या बता रहे हैं...। आरती नहीं हमें पता कैसे करनी है। हमें यह नहीं पता भोग कैसे लगाना है। ५० साल हो गये भक्ति करते हुए... हमें यह नहीं पता चला कि आरती कैसे करते हैं भगवान् की। हम ५० साल सेवा में... यह नहीं पता गुरु-पूजा कैसे की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है– *'प्रथमं तु गुरुं पूज्य'।* सबसे पहले गुरु की पूजा करो। हम भी तो यही कह रहे हैं। हम भी तो ये शास्त्र बता रहे हैं। *'प्रथमं तु गुरुं पूज्य'।* पर कैसे करो गुरु की पूजा ? पहले भगवान् की पूजा करो। सारा प्रसादी जो हो...वो उच्छिष्ट से गुरु की पूजा की जाती है।

गुरु की पूजा केवल उच्छिष्ट से की जाती है, सीधी नहीं की जाती। हम चादर तो पहनते नहीं बिना भगवान् को अर्पण किये... ये कुर्ता हो, चादर हो... कोई भी वस्तु हो... वो तो हम अर्पण किये बिना पहनेंगे नहीं। आरती करवायेंगे अपनी ? गुरु की आरती करेंगे या करवायेंगे अपनी ? ऐसा नहीं है।

गदाधर पण्डित, श्रीवास पण्डित की भी आरती नहीं होती है, तो किसी और की आरती हो सकती है ? यदि आप बुद्धिमान हो, तो आपको explain करने की ज़रूरत नहीं है। यदि कोई Institute of fanaticism है, तो *'वृथा जन्म गेलो तार'। 'वृथा जन्म गेलो तार'।* हम महाप्रभु के भक्त हैं। हम कोई Institution के भक्त नहीं हैं। हम भक्ति महाप्रभु की करने आये हैं... Institution की भक्ति करने नहीं आये हैं किसी।

8

गौड़ीय वैष्णवों की मंगला आरती

भक्त– महाराज जी! किन्हीं भक्त ने प्रश्न किया था हमसे कि वह कई सालों से Iskcon में मंगला आरती attend कर रहे हैं और वहाँ पर उन्होंने बताया कि मंगला आरती में *"संसार दावानल"* गाया जाता है। तो उनका प्रश्न है कि क्या यह सही है? कृपया करके मार्गदर्शन करें।

महाराज जी– देखिये, जब प्रातः बेला है, उसमें गुरु अष्टकं करना, गुरु की महिमा गान करना ही चाहिये...कोई हानि नहीं है। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर कहते भी हैं कि करना चाहिये। अच्छा है...कर सकते हैं।

पर हमनें यही प्रश्न अपने गुरुदेव, श्रील अनन्तदास बाबाजी महाराज से भी किया था। हमने बोला...बाबाजी! Iskcon में मंगला आरती के समय *"संसार-दावानल-लीढ-लोक..."* होता है।

फिर उसके बाद पञ्चतत्त्व मन्त्र होता है।
फिर उसके बाद हरे कृष्ण महामन्त्र होता है।
फिर मंगला आरती शेष हो जाती है।
तो बाबाजी ने कहा– *संसार दावानल*, हरे कृष्ण, पञ्चतत्त्व होता है?
हमने कहा– जी बाबाजी।
तो बाबाजी ने पूछा कि मंगला आरती नहीं होती?

हमने कहा– बाबाजी, *"संसार दावानल..."* होता है, पञ्चतत्त्व मन्त्र होता है उनका, हमारे वाला नहीं, पञ्चतत्त्व मन्त्र उनका होता है और हरे कृष्ण महामन्त्र होता है, इसी को ही मंगला आरती बोला जाता है।

बाबाजी ने कहा– मंगला आरती नहीं होती ? यह तो गुरु अष्टकं है।

हमने कहा– है तो गुरु अष्टकं, पर यही मंगला आरती होती है।

बाबाजी ने कहा– यह तो गुरु अष्टकं है, यह मंगला आरती थोड़ा न है ! मंगला आरती तो अलग पद होता है। राधाकृष्ण की मंगला आरती करेंगे, तो राधाकृष्ण का पद-गान किये बिना मंगला आरती कैसे होगी ? और अगर आप गौर निताइ को ठाकुर रख रहे हैं, तो उनका पद-गान अलग होता है।

हमारे यहाँ तो हम करते हैं मंगला आरती...राधाकृष्ण की, गौर की भी अलग पद-गान से करते हैं।

बाबाजी ने कहा कि गुरु अष्टकं कर सकते हैं सुबह, पर मंगला आरती तो करो। Iskcon के भक्तों से पूछो कि आप गुरु अष्टकं करते हो, तो मंगला आरती करते हो ? तो वो कहते हैं कि विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने कहा है...तुम गुरु अष्टकं करो सुबह-सुबह, प्रेमभक्ति प्राप्त होगी।

अच्छी बात है, पर विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने यह कब कहा है कि मंगला आरती की जगह इसको करो। यह भी उन्होंने लिखा है, कि मंगला आरती मत करना, इसकी जगह गुरु अष्टकं करना ? साथ में करने में तो कोई हानि नहीं है। पर मंगला आरती ही नहीं करोगे इष्टदेव की ? जिनकी आरती करोगे...उनके बारे में कोई गुणगान नहीं, कोई बातचीत नहीं। हैरानगी की बात है ! Iskcon के अलावा ऐसी मंगला आरती पूरे विश्व में कहीं नहीं होती...कि आप जिस ठाकुर की सेवा कर रहे हो, उनके बारे में कुछ बोला ही नहीं जा रहा...कि आपकी आरती हो, बलिहारी जाऊँ आप पर, कुछ भी नहीं बोलते।

हमारे यहाँ तो यही आरती होती है गौर निताइ की, तीनों प्रभु की और उसी प्रकार से पद-गान होते हैं हमारे।

आपको स्पष्ट बतायें, अगर Iskcon में केवल यही बात को accept कर लिया जाये कि हम मंगला आरती के पद-गान करेंगे, तो society collapse हो जायेगी !!

अब आप पद-गान करोगे राधाकृष्ण के, निताइ गौर के, और आपने साथ में बैठाया हुआ है सीता-राम-लक्ष्मण-हनुमान को भी और जगन्नाथ-बलदेव-सुभद्रा को भी, तो कितनी मंगला आरतियाँ करोगे? और आरती में गाओगे कि मैं आपके अलावा किसी की सेवा नहीं चाहता। वो आरती खत्म होते ही सीता-राम की आरती...सीता-राम जी, मैं आपके अलावा किसी को नहीं चाहता। वह खत्म हुई, फ़िर नृसिंह भगवान् का भी same, हे नृसिंह भगवान्! मैं आपके दर्शन के अलावा कुछ नहीं चाहता...जय हो आपकी, आपके अलावा किसी की सेवा नहीं चाहता। खत्म हुई, फिर जो और कोई बचे हुए होंगे, उनकी भी ऐसे ही करेंगे।

Gaudiya Math में तो वराह-लक्ष्मी भी हैं, हमने अपनी आँखों से देखे हैं। वहाँ तो वराह-लक्ष्मी की भी करते हैं। भाई! कितनों की मंगला आरती करोगे आप?

दो-तीन घण्टे चाहिये होंगे आपको मंगला आरती करने के लिये। और question भी आयेगा... अभी मैंने इनको यही बात बोली थी कि आपके दर्शन के अलावा कुछ नहीं चाहता, मेरा कोई दीन ईमान भी है या नहीं?

अगर आप Iskcon में मंगला आरती को ही introduce कर दो सिर्फ, तो society collapse हो जाती है!! आप भक्तों को अज्ञानता में रहना ही होगा, तभी आप Iskcon में continue कर सकते हो। आप मंगला आरती पद डाल दो, आप बताओ society कैसे continue करेगी? सिर्फ इस बात का उत्तर दे दो हमें। कोई भी leader इस बात का उत्तर दे दो। कोई कहे कि हम continue कर लेंगे...अच्छा! मंगला आरती पद डाल कर दिखा दो एक बार।

एक चीज़ सोचिये, मैं राधाकृष्ण की मंगला आरती कर रहा हूँ और नृसिंह भगवान् की भी...और इनकी भी, फिर तुलसी आरती के बाद चाहिये तो सिर्फ राधाकृष्ण। इन सभी की रोज़ मंगला आरती कर रहा हूँ।

क्यों कर रहा हूँ? मन में आयेगा नहीं यह question? Why I am doing what I am doing? Question आयेगा अपने आप से। If I am a devotee of Rādhā Kṛṣṇa, तो simple question है– मुझे सीता-राम-लक्ष्मण-हनुमान के विग्रह के सामने क्यों रोज़ आरती attend

करनी है? इसका उत्तर दे दो बस...अगर मैं राधाकृष्ण का भक्त हूँ। क्योंकि राधारससुधानिधि में बता रहे हैं प्रबोधानन्द सरस्वतिपाद-

"जाग्रत-स्वप्न सुषुप्तिषु स्फुरतु मे राधापदाब्जच्छटा।"

चाहे जागृत अवस्था हो, चाहे स्वप्न हो, चाहे शयन हो, मुझे राधारानी की चरण छटा के अलावा हृदय में कुछ भी स्फुरण न हो। और आप तो जागृत में आरती करवा रहे हो किसी और की रोज़।

और रघुनाथदास गोस्वामी विलाप कुसुमाञ्जलि में कह रहे हैं कि राधारानी के बिना मुझे कृष्ण भी नहीं चाहिये अकेले! आपको राधाकृष्ण के बिना सीता-राम-लक्ष्मण-हनुमान भी रोज़ चल रहे हैं...यह कौन सी सम्प्रदाय की उपासना है?

और दूसरी बात जो हमने बतायी– मञ्जरियों को तो आपने नृसिंह भगवान् में बैठा दिया... वराह-लक्ष्मी में, सोचो। वराह भगवान् का शूकर रूप है। लक्ष्मी वराह हैं, अच्छी बात है। पर वहाँ मञ्जरियाँ क्या करेंगी?

आप एक भी चीज़ अगर bonafide करोगे, तो आप Iskcon में नहीं रह सकते। आपके इतने सारे ठाकुर हैं। या तो आप Altar में आचार्यों को नहीं रखो। अगर आप आचार्यों को Altar में नहीं रखोगे, तो Altar पूरा नहीं होगा। आचार्यों को तो Altar में होना पड़ेगा न? षड्गोस्वामी हो नहीं सकते। और कोई है नहीं...। आपका Altar ही पूरा नहीं हुआ। उसी Altar में गुरुदेव हैं और राधाकृष्ण की मञ्जरी भी हैं, वहीं गौर के दास, उसी Altar में वराह हैं, वहीं गुरुदेव को भी बैठा दिया...नृसिंह भगवान् के Altar में सबको बैठा दिया। जैसे मान लो, हम किसी के गुरु हैं...तो उन्होंने हमें नृसिंह भगवान् के Altar में बैठा दिया और सीताराम के भी Altar में बैठा दिया, फिर हमें बैठा दिया उन्होंने वराह-लक्ष्मी के Altar में। तो हम सामने खड़े हो गये...तो हम पूछेंगे नहीं क्या कि हमारा तो कोई लेना-देना ही नहीं...क्यों बैठाया तुमने वहाँ? भाई! जब हम पूछेंगे, तो क्या रूप सनातन गोस्वामी नहीं पूछेंगे? मैंने तुम्हें इनकी उपासना दी थी? मैंने तुम्हें ये मन्त्र दिये थे?

अगर आप मंगला आरती पद-गान करोगे, तो आपकी Iskcon ki society तुरन्त collapse हो जायेगी। क्योंकि पद-गान से सबको यह स्पष्ट हो जायेगा कि मञ्जरी कौन हैं, और कौन कहाँ हैं...।

9

Granthas ~ As it is OR from Preaching Point of view

भक्त– महाराज जी! iskcon में बताया जाता है कि केवल श्रील प्रभुपाद कि ही Books पढ़नी चाहिए। क्यूंकि as-it-is हैं, पर्याप्त हैं गौड़ीय वैष्णव कि सिद्धि के लिए तो क्या यह सही बात है महाराज जी ?

महाराज जी– और यह बोला जाता है...यह हमारी भगवद् गीता है as-it-is...! अच्छा! आप बताओ कैसे as-it-is है? क्या इसमें जो श्लोक का अनुवाद है, क्या केवल वही दिया गया है? अच्छा as-it-is का मतलब क्या होगा? जो बोला गया, वही बताया गया...इसको ही तो as-it-is बोला जायेगा। भगवद् गीता तो सनातन है। चौथे अध्याय के पहले श्लोक में बताया गया है कि भगवान् ने सूर्यदेव विवस्वान को ज्ञान दिया, विवस्वान ने मनु को दिया...इस प्रकार दिया गया। भगवद् गीता तो अनादि है। किसी आचार्य ने हर युग में...किसी ने बोला है कि भगवद् गीता preaching point of view से है? किसी ने आज तक कभी preaching point of view से commentary की है? बलदेव विद्याभूषण भी आचार्य ही हैं। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर या किसी ने preaching point of view से लिखा है? तो अगर point of view आ गया कभी भी...किसी भी ग्रन्थ में, तो क्या वह as-it-is रह गया?

जैसे मान लीजिये, हम भगवद् गीता पर commentary लिख रहे हैं। हमने अपने point of view से लिखा दिया। मान लीजिये, हमारा नाम माधव दास है। माधव दास point of view...तो क्या वह as-it-is रहा? वह तो माधव दास का point of view बन गया न? As-it-is तो रहा ही नहीं। उसी प्रकार से preaching point of view से सभी ग्रन्थ हो गये... भगवद् गीता preaching point of view, चैतन्य चरितामृत preaching point of view... अच्छा! भागवतम् भी preaching point of view! Iskcon ki books ko Iskcon के अलावा कोई नहीं पढ़ता। आप पूरे ब्रज में कहीं भी चले जाओ, पूरे ब्रज में बोलोगे कि आप Iskcon की books पढ़ते हो? कहेंगे नहीं, वह तो सब प्रचार के हिसाब से लिखा हुआ है...

प्रचार करो बस...। आचार्यों ने तो ऐसा कहीं नहीं लिखा। चलो, जीव गोस्वामी ने preaching point of view से लिखा हो, तो आप बताओ। सनातन गोस्वामी ने preaching point of view से लिखा हो, तो आप बताओ। विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने preaching point of view से कोई ग्रन्थ लिखे हैं, तो आप बताओ। बलदेव विद्याभूषण ने लिखे हैं, तो आप बताओ। उन्होंने सब as-it-is लिखा है। Point of view preaching हो या कोई भी हो... वह आते ही as-it-is तो evaporate हो गयी फटाफट...खत्म...over...as-it-is has gone. It is not as-it-is anymore !

जब तक ये ग्रन्थ...वृन्दावन महिमामृत, राधारससुधानिधि... जब तक institutional commentary से रहित नहीं पढ़ोगे, तो आपको सत्य ज्ञान की, गौड़ीय वैष्णव की ABCD भी अनादि काल तक समझ नहीं आयेगी। पहले तो institutional commentary से हटाकर, फिर as-it-is ग्रन्थ पढ़ना। जानो कि कहाँ मिलते हैं as-it-is ग्रन्थ। Preaching point of view से कोई भी ग्रन्थ ले आयेंगे, वह कभी भी as-it-is नहीं रहेगा...आप जो मर्ज़ी ढोल बजाते रहो कि यह as-it-is है।

अरे ! अनेक आचार्य हर युग में आये हैं, अभी भी हैं...चाहे आप तमिलनाडु चले जाओ। तमिलनाडु...South side इसलिये बोलते हैं क्योंकि वहाँ ऐश्वर्य उपासना बहुत प्रधान है। आप अयोध्या चले जाओ, ब्रज चले जाओ...। अरे ! भगवद् गीता की तो अनगिनत commentries हैं। आप देख लो कि एक भी व्यक्ति ने लिखा हो कभी preaching point of view से...? यह श्लोक है... इसका मतलब यह है।

अब बताओ, प्रह्लाद महाराज was in Kṛṣṇa consciousness...इस बात का क्या सिर पैर है ? प्रह्लाद महाराज का Kṛṣṇa consciousness से क्या लेना देना था ? नृसिंह भगवान् प्रकट हुए हैं...कृष्ण का उसमें क्या लेना देना था...बताओ ? He was in Kṛṣṇa consciousness... यह क्या बात हुई ? और Society का नाम क्या है...International Society of Kṛṣṇa consciousness. और जबकि हम कह रहे हैं कि *आमार ईश्वरी वृन्दावनेश्वरी !* हमारी ईश्वरी राधारानी हैं, तो हमारे तो *जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिषु*...कि २४ घण्टे राधारानी के अलावा हमें कुछ

नहीं चाहिये, तो हमारा International Society of Rādhā consciousness होना चाहिये ! कृष्ण तो हमें बिना राधारानी के चाहिये भी नहीं ! मञ्जरियाँ मतलब Rādhā consciousness हैं...*श्रीमती समा सबे*...Rādhā consciousness से भरी हुई होंगी, तभी तो उन्हें वह आस्वादन मिलेगा, नहीं तो कैसे मिलेगा ? एक प्राण एक आत्मा किससे हैं ? राधारानी से। तो Rādhā consciousness से भरी हुई नहीं होगी, तो गौड़ीय वैष्णव बन ही नहीं पाओगे आप कभी। Society Kṛṣṇa consciousness है, तो हमारा उससे क्या लेना-देना फ़िर ? हमें कृष्ण की गोपी तो बनना नहीं है। *नमोस्तु नमोस्तु नित्यं...।* तो Kṛṣṇa consciousness का हम करेंगे क्या ?

18वां अध्याय श्लोक 68–69. 18.68–8.69 . श्लोक अपने आप में सब बता रहा है भगवत वाणी है न –

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशय: ॥

श्री कृष्ण बोल रहे हैं *'य इदं परमं गुह्यं'* ये जो परम गुह्यं ज्ञान है supreme secret ये जो knowledge है ये जो ज्ञान देता है किसको *'मद्भक्तेष्वभिधास्यति*, मेरे भक्तों को देता है। जो already भक्त है, कंठी धारण करे हुए हैं, माला करते हैं, भोग लगाते हैं भक्त उन्हीं को बोला जाता है न ? भक्त किसको बोलते हो ? वही कंठी धारण करके हुए हैं, हरिनाम लेते हैं, भोग लगाते हैं, आरती करते हैं इन्हीं को भक्त बोलते हैं। तो जो ये ज्ञान मेरे भक्तों को देता है, परम गुह्यं ज्ञान, जो यह रहस्य बताता है परम गुह्यं ज्ञान, मेरे भक्तों को, वो जो है, मेरे पास आता है उसको परा भक्ति प्राप्त होती है, उसको शुद्ध भक्ति प्राप्त होती है, और वो मेरे पास आता है। ये भगवान् बता रहे हैं जो मेरे भक्तों को ज्ञान ये नहीं बोल रहे कि जो संसारियो को ज्ञान देता है।

जो ये iskcon में प्रचार है हम यह नहीं कह रहे कि गलत बात हो रही है अच्छा है भगवत नाम मिलेगा तो कोई नुकसान तो नहीं है बस ये इतना बात कहना चाह रहे हैं वह भी बहुत हाथ

जोड़कर की ये भगवान् कृष्ण गीता में ये बात नहीं बोल रहे कि जो मेरा प्रचार करता है वो मुझे बहुत प्रिय है ये नहीं बोल रहे श्रीकृष्ण।

भगवद गीता में ये कभी नहीं बोला गया जो मेरा प्रचार करता है, इसके ऊपर पूरा संस्था चल रही है कि जो प्रचार करो प्रचार करो...।

जैसे शराब होती है, वह neat पियोगे, तो आपको नशा चढ़ेगा। और २ चम्मच शराब में ५०० लीटर अपना पानी मिला दो, तो उसमे कुछ नही चढ़ने वाला।

ये ग्रन्थ बिना किसी institutional commentary के पढ़ने हैं। यह सबसे महत्त्वपूर्ण है। पता चले, फिर institution ने अपनी commentary डाल दी। वह नहीं हो फिर। Neat पीनी है। शराब neat पियोगे, तो नशा चढ़ेगा। यह नहीं सोचो कि हमने शराब पी है। हमने कभी कोई शराब नहीं पी। सुना है कि ऐसे होता है। हाँ, यह वाली तो पी हुई है ! यह पान तो हम करते हैं। और नशा वाकई में चढ़ता है। तो आपको भी यह नशा चढ़ा, इसलिये आपको भी पान करना चाहिये। और neat पान, no institutional commentary.

10

Bhagavad Gītā 18.68-18.69

प्रश्न – महाराज जी, दिल्ली में एक भक्त है प्रवीण जी उन्होंने हमें phone किया और उन्होंने बताया कि वह देखते हैं कि iskcon के जो भक्त हैं वो सड़कों पर खड़े हो के भगवत गीता बांट रहे होते हैं, वितरण कर रहे होते हैं, red light पर खड़े हो के कर रहे होते हैं और जब उन्होंने उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों करते हो हैं तो उन्होंने बोला कि स्वयं भगवान् ही बोल रहे हैं भगवत गीता में, जो सभी जीवो को प्रचार करता है वो मेरा सबसे प्रिय हो जाता है, तो वो जानना चाह रहे हैं कि क्या वो सही कह रहे हैं वो आपसे request कर रहे हैं कि आप इस पर उनका मार्गदर्शन करें।

महाराज जी – भगवान् बोल रहे हैं कि जो प्रचार करता है वो उसे प्रिय है भगवत गीता में बोल रहे हैं।

भक्त – जी उन्होंने बताया की iskcon के भक्त वो उन्हें बताया है।

महाराज जी – भगवत गीता में 700 श्लोक हैं उनमें तो नहीं बोल रहे भगवान यह बात। जो भगवान बोल रहे हैं हम आपको बता देते हैं।

18वां अध्याय श्लोक 68–69. 18.68–8.69 . श्लोक अपने आप में सब बता रहा है भगवत वाणी है न –

य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशय: ॥

श्री कृष्ण बोल रहे हैं *'य इदं परमं गुह्यं'* ये जो परम गुह्यं ज्ञान है supreme secret ये जो knowledge है ये जो ज्ञान देता है किसको *'मद्भक्तेष्वभिधास्यति*, मेरे भक्तों को देता है। जो

already भक्त है, कंठी धारण करे हुए हैं, माला करते हैं, भोग लगाते हैं भक्त उन्हीं को बोला जाता है न? भक्त किसको बोलते हो? वही कंठी धारण करके हुए हैं, हरिनाम लेते हैं, भोग लगाते हैं, आरती करते हैं इन्हीं को भक्त बोलते हैं। तो जो ये ज्ञान मेरे भक्तों को देता है, परम गुह्यं ज्ञान, जो यह रहस्य बताता है परम गुह्यं ज्ञान, मेरे भक्तों को, वो जो है, मेरे पास आता है उसको परा भक्ति प्राप्त होती है, उसको शुद्ध भक्ति प्राप्त होती है, और वो मेरे पास आता है। ये भगवान् बता रहे हैं जो मेरे भक्तों को ज्ञान ये नहीं बोल रहे कि जो संसारियो को ज्ञान देता है।

जो ये iskcon में प्रचार है हम यह नहीं कह रहे कि गलत बात हो रही है अच्छा है भगवत नाम मिलेगा तो कोई नुकसान तो नहीं है बस ये इतना बात कहना चाह रहे हैं वह भी बहुत हाथ जोड़कर की ये भगवान् कृष्ण गीता में ये बात नहीं बोल रहे कि जो मेरा प्रचार करता है वो मुझे बहुत प्रिय है ये नहीं बोल रहे श्रीकृष्ण।

जिसको थोड़ी सी भी संस्कृत आती हो और थोड़ा सा भी unbaised हो तो आधे सेकंड में यह बात समझ आ जाएगी। *'मद्भक्तेष्वभिधास्यति'* मेरे भक्तों को स्पष्ट बोल रहे हैं मेरे भक्तों को। हमने iskcon के एक पंडित हैं संस्कृत स्कॉलर है बहुत बड़े हम नाम नहीं लेना चाहेंगे उनका जीवन कठिनाई में आ जाए नहीं तो, उन्होंने हमने उनसे बात करी थी हमने कहा इसमें स्पष्ट तुम्हें तो संस्कृत आती है, हमने बोला कि प्रभुजी आपको तो संस्कृत आती है। ये तो बोला जा रहा है *मद्भक्तेष्वभिधास्यति* मेरे भक्तों और आप कह रहे हो मेरे प्रचार करने वाले को... वह कहते मुझे पता है यह ठीक नहीं है। पर रोटी, पानी चलता है बिचारे वह भी क्या करेंगे। है संस्कृत के scholar हमारी उम्र के है।

तो भगवत गीता में ये कभी नहीं बोला गया जो मेरा प्रचार करता है। इसके ऊपर पूरा संस्था चल रही है कि जो प्रचार करो, प्रचार करो। महाप्रभु कह रहे हैं, बाह्य, अन्तर,—इहार दुइ त ' साधन। अंतर साधन भी करो और बाहर श्रवण-कीर्तन भी करो। महाप्रभु तो आपको भक्ति करने के लिए कह रहे हैं तुम भक्ति खुद तो करो जन्म सार्थक तो करो तुम परोपकार करो, जन्म सार्थक कौन करेगा, तिलक लगाना तो सीख लो कौन सा तिलक लगाना है।

परम्परा Altar कैसे सजाया जाता है, वो तो सीख लो, क्योंकि आपके Alter में जो-जो तिलक लगाते थे पहले वो सीख लो प्रचार अपने आपको करो पहले की मेरे गुरु कौन है? उनके गुरु कौन है? क्या हम सारे एक तिलक लगाते हैं? फिर मेरी कोई परम्परा तो हो कोई।

अच्छा शिक्षा परम्परा है, वो ठीक है पर तुम उनकी शिक्षा तो follow कर लो। अच्छा किसी की शिक्षा तो follow करो, गौर किशोर दास बाबा, भक्ति विनोद ठाकुर हो। प्रचार कर लो और जब कि भगवान् ने बोला भी नहीं गया *'मद्भक्तेष्वभिधास्यति'* ये परम गुह्यं ज्ञान है जो हम आपको ये बता रहे हैं गुह्यं ज्ञान ये जो है भगवान् का प्रिय कर देगा। प्रियता प्रदान करने वाला है।

भगवान्, जो ये परम गुह्यं प्राप्त हो रहा है आपको, यह रहस्य भक्तों को बताया जा रहा है। किसको बता रहे हैं हम? ये जो बातें बोल रहे हैं कि संसारी व्यक्ति को 100 साल बाद भी समझ आएगी कि क्या हम बोल रहे हैं। ये परम्परा ये परिवार, ये तिलक, ये गोल, ये जनेऊ, वह मंत्र ये किसी को समझ आएगी? किसको समझ आएगी केवल? जो भक्ति में वास्तव में डूबना चाहते हैं। ये बोला जा रहा है *'मद्भक्तेष्वभिधास्यति'*, जो मेरे भक्तों को परम गुह्यं ज्ञान देता है वह मुझे सर्वाधिक प्रिय है। सर्वाधिक प्रिय होना कोई खेल-तमाशा है, जो 4 दिन प्रभु बने और तुम सर्वाधिक प्रिय बन जाओगे भगवान को। खेल-तमाशा समझा हुआ है?

परम गुह्यं ज्ञान जो है पहले, आपको पता तो हो कि परम गुह्यं ज्ञान होता क्या है? अभी तो आपको चार श्लोक पता चले जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, दुख दोषंम, आहार, निद्रा, भय इसको प्रचार करके सोचते हो मैं परम गुह्यं ज्ञान दे दिया। आपका स्तर तो हो कि परम गुह्यं ज्ञान देने की आप आपका स्तर तो हो अधिकार तो हो। ये आचार्य कोटि के महापुरुष अधिकारी भक्तों को ज्ञान देते, भक्तों को तो already सब पता है वह तो कहते हैं मैं तो खुद दीक्षित हूँ।

और मैं तो खुद श्लोक पढ़ता हूँ, जानता हूँ, मुझे कौन प्रचार बताएगा?

उन लोगों को जो बताते हैं गुह्यं ज्ञान वह भक्तों को जो गुह्यं ज्ञान वह व्यक्ति जो है वह भगवान् का प्रिय होता है। भक्तों को प्रचार, कोई खेल-तमाशा है। एक स्तर पर जब तक नहीं होगे तब

तक भक्तों से जो पुराने भक्त वह आपकी बात सुनेंगे। सुनना छोड़ो गुह्यं ज्ञान देना भक्तों को ये 40 साल से हरे कृष्ण कर रहे आप सुन रहे हैं, ये गुह्यं ज्ञान दिया जा रहा है इनको। नहीं ये नहीं बोल रहे मुझे कौन देगा मैं तो गुरु भक्त हूँ 40 साल से। 40, 30, 40 ऐसा होगा न 30–40 साल से ये बोले मुझे कौन देगा दिया जा रहा है। ये है इस श्लोक का मतलब। उदाहरण देकर आप को समझा रहे हैं।

'य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति' एक iskcon के भक्त थे वह हमसे जुड़े वह 27 साल से iskcon मे थे तो यहां पर दीक्षा हुई उनकी हमारे यहां तो हमने उनको पहले ही बता दिया था पहले दिन देखो अगर आपको abcd भी गौड़िय वैष्णव की समझ नहीं है तो 2 साल के बाद समझ आएगी Abcd. 27 साल पुराने भक्तों को हमने बोला। ये बोलते इसका मतलब है *'य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति'*, 27 साल से जो भक्ति कर रहा है उसको बोला तुम्हें abcd समझनी है तो तुम्हें 2 साल लगेंगे। ये गुह्यं ज्ञान है। वो 27 साल पुराना भक्त वो वहां पर iskcon में सिखाते थे Deity Worship. Deity Worship लोग उनसे सीखने आते थे उनको ज्ञान दिया। ये नहीं सीधा ज्ञान 2 साल बाद तो abcd सीखनी उसके बाद तो आप वाक्य बनाना शुरू करोगे। A for apple, पहले अक्षर समझो, फिर वाक्य बनाओगे, फिर essay बनाओगे ये होता है।

11

Can Gaura Kiśora Dāsa Bābājī Mahārāja and Jagannātha Dāsa Bābājī Mahārāja be in same Paramparā?

भक्त– जी। वो कहते हैं कि हमारी तो दीक्षा परम्परा भी है, शिक्षा परम्परा है, इसलिये हमने अलग-अलग परिवारों के जो सन्त महापुरुष हैं, उनको अपने Altar में रखा हुआ है।

महाराज जी– आप यह कह रहे हैं कि भक्तिविनोद ठाकुर,जगन्नाथदास बाबाजी, गौरकिशोर दास बाबाजी...ये आपकी परम्परा है। आपकी ये परम्परा है, आपकी जानकारी के लिये हम बताना चाहेंगे कि त्रिकाल में यह सम्भव नहीं है। त्रिकाल होता है past, present, future... इसको त्रिकाल कहते हैं। त्रिकाल में यह सम्भव नहीं है कि गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज और जगन्नाथदास बाबाजी महाराज एक परम्परा में हो जायें...यह त्रिकाल में संभव नहीं है।

प्रश्न उठता है– क्यों? देखो! आप...हमारा तिलक देख रहे हो...ये लगा हुआ। ये कैसे है नीचे? ऐसे है...एक पत्ते की चोंच-सी बनी हुई लग रही है। अद्वैताचार्य का जो तिलक होता है, आप फोटो दिखाइयेगा...रघुनाथदास गोस्वामी जो हैं, वो अद्वैताचार्य, अद्वैत परम्परा में हैं। तो उनका तिलक ऐसे गोल सा होता है एक।

परम्परा का मतलब होता है... पहले तो यह समझो, परम्परा में ऐसा नहीं है कि ये परम्परा में हमने किसी को बना दिया। परम्परा में या तो कोई है या तो कोई नहीं है। जो अद्वैताचार्य हैं, उन्होंने किन्हीं को दीक्षा दी...। अच्छा समझो कि परम्परा क्या होती है? जैसे अद्वैताचार्य हैं, उन्होंने किन्हीं को दीक्षा दी...मानो १० लोगों को दी, उन्होंने १० लोगों ने अलग-अलग दी, उनमें ४ लोगों ने दीक्षा दी, किसी ने १००० को दी, किसी ने ५०० को दी, उन्होंने फिर दीक्षा दी। तो ये अद्वैताचार्य की परम्परा आज तक आ रही है। इसमें नित्यानन्द प्रभु के परिवार वाला कोई भी नहीं जुड़ सकता। ठीक है? उनका सबका तिलक वही है...अद्वैताचार्य वाला, जो रघुनाथ

गोस्वामी को लगा हुआ है। और जो गौरकिशोर दास बाबाजी लगाते हैं, वही गोल तिलक है। गौरकिशोर दास बाबाजी अद्वैत परम्परा में हैं। अद्वैत परिवार में हैं।

उनकी परम्परा जो है, अद्वैत परिवार से आती है। हमारा जो तिलक यह वाला है...लगाते वे भी काला तिलक ही हैं...। जो हमारा तिलक है, यह नित्यानन्द परिवार का है। नित्यानन्द प्रभु ने मान लो, नित्यानन्द परिवार में १०० लोगों को दीक्षा दी। फिर उनमें से मान लीजिये १० लोगों ने दीक्षा दी। उन्होंने...किसी ने १००० को...किसी ने २०० को...किसी ने १०० को...५० को दी। फिर ऐसे नित्यानन्द प्रभु से अलग-अलग, नित्यानन्द परिवार से अलग-अलग परम्परायें आ गयी। कोई कहाँ से कोई कहाँ से। जैसे मान लो, नित्यानन्द प्रभु ने कईयों को दीक्षा दी। एक का नाम है बलरामदास, एक का नाम है श्यामदास। फिर जो बलरामदास की परम्परा में आ रहे हैं और जो श्यामदास की परम्परा में आ रहे हैं, वो दोनों अलग हो जाती हैं। परिवार नित्यानन्द ही रहेगा।

प्रकार से जो नित्यानन्द प्रभु की परम्परा में भक्तिविनोद ठाकुर भी हैं और जगन्नाथदास बाबाजी भी हैं, पर वो अलग-अलग परम्परा हो जाती हैं। परिवार नित्यानन्द है , Channel को परम्परा बोलते हैं। परिवार नित्यानन्द है। वैसे ही, गौरकिशोर दास बाबाजी का परिवार अद्वैत है। पहली बात तो यह है कि जब जगन्नाथदास बाबाजी और भक्तिविनोद ठाकुर दोनों नित्यानन्द परिवार के हैं, जब वे ही एक परम्परा में नहीं हो सकते, नित्यानन्द परिवार के होने के बावज़ूद...तो जो बिल्कुल ही अलग परिवार के हैं, अद्वैताचार्य हैं...वो एक परम्परा में कैसे हो जायेंगे ? जब नित्य नवद्वीप में सेवा होती है न, तो नित्यानन्द परिवार के लोग अलग रहते हैं। उनका रहने का स्थान भी अलग है।

ध्यान दो ! आप गौड़ीय वैष्णव हो ? आप सिद्धि चाहते हो ? हम आपको बताते हैं सिद्धि में क्या होता है। जब आप सिद्ध होते हो, तो आप नित्य नवद्वीप में प्रवेश करते हो। कहीं रहते भी होगे ? हाँ...। आप रहते हो जहाँ...जिस परिवार में आपकी दीक्षा हुई है। जैसे मान लो अब आपकी अद्वैत परिवार में दीक्षा हुई है, तो जो अद्वैताचार्य के आस-पास घर बने हुए हैं, अद्वैताचार्य जी के घर के आस-पास, तो आपका रहने का स्थान वहाँ है। सोते भी वहीं हो, उठते भी वहीं हो,

कुल्ला भी वहीं करते हो। अब भक्तिविनोद ठाकुर हैं या जगन्नाथदास बाबाजी हैं, वो बिल्कुल अलग स्थान हैं। वे नित्यानन्द प्रभु के स्थान पर रहते हैं।

गौरकिशोरदास बाबा अद्वैत प्रभु के स्थान। सोते भी हैं नित्यानन्द प्रभु के पास में हैं, वहीं रहते हैं। और जगन्नाथदास बाबा और भक्तिविनोद ठाकुर, और कुल्ला करना...सब सेवा करना... वो वहाँ नित्य...वहीं से start होता है सब कुछ। तो कभी एक परम्परा में होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

12

Are you in Śikṣā Paramparā of Bhaktivinoda Ṭhākura, Gaura Kiśora Dāsa Bābājī Mahārāja, Jagannātha Dāsa Bābājī Mahārāja?

भक्त– जी...कि शिक्षा परम्परा भी कुछ होती है...उन्होंने बताया था कि हमारी तो शिक्षा परम्परा है, दीक्षा परम्परा नहीं है, इसलिये हमने अलग-अलग आचार्यों को अलग परिवारों से लिया है।

महाराज जी– आपने बोला की हमारी शिक्षा परम्परा है, और दीक्षा परम्परा नहीं है, तो हमने अलग-अलग आचार्यों को एक जगह रख दिया? देखिये परम्परायें या तो होती हैं या नहीं होती। ये कोई made up नहीं है कि हमें कोई Superstars अच्छे लग गये, सबको इकट्ठा रख लिया हमने...बोले कि ये मेरी परम्परा है...ऐसा नहीं होता। माना बहुत बड़े सिद्ध हैं जगन्नाथदास बाबाजी, गौरकिशोरदास बाबाजी, भक्तिविनोद ठाकुर। पर वो परम्परा नहीं होती। Paramparā is not a collection of superstars. परम्परा या अद्वैत परिवार की है या नित्यानन्द परिवार की। आपकी कौन सी है, यह बताओ? ये नहीं...हमारी ये है, हमारी ये नहीं होती। परम्परा या तो होती है या नहीं होती। पहले तो यह समझो। परम्परा कोई बना नहीं सकता।

आपको दूसरे...आपको आपकी भाषा में समझायें। देखो नित्य नवद्वीप है न, वहाँ गौरकिशोर दास बाबाजी हैं, वे अद्वैत परिवार की परम्परा में हैं। कोई चाह के भी उनसे जुड़ नहीं सकता अन्य परिवार का। वो अपना परितुष्ट हैं वहाँ पर अद्वैताचार्य की सेवा करके। अब जो जगन्नाथदास बाबाजी हैं, वे अलग परिवार से हैं। वे अपने परिवार के साथ रहकर सेवा कर रहे हैं महाप्रभु की, नित्यानन्द की, अद्वैताचार्य की। तो बनाने का तो प्रभु तो हैं, आप थोड़ा न डाल दोगे...नहीं हमारी एक...ये परम्परा है। आप कौन हो? आप क्या हो?

परम्परा eternally exist करती है। अरबों साल तक ये ऐसे ही serve होगा। अद्वैताचार्य की परम्परा में ही गौरकिशोर दास बाबा serve करेंगे। अरबों-खरबों साल तक...। इसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता। कोई परम्परा नहीं बनायी जा सकती कभी भी।

अब आप कहते हो हमारी शिक्षा परम्परा है, दीक्षा परम्परा नहीं है। गौरकिशोर दास बाबाजी, भक्तिविनोद ठाकुर जो हैं, शिक्षा परम्परा में तो follow करना चाहिये शिक्षा को।

गौरकिशोर दास बाबाजी को, भक्तिविनोद ठाकुर जी को, आपने परम्परा में रखा हुआ है इनको...रखा हुआ है न? भक्तिविनोद ठाकुर, गौरकिशोर दास बाबाजी, और जगन्नाथदास बाबाजी महाराज...ये आपने परम्परा में रखा है...आप कहते हो। आपकी परम्परा मतलब... आप इनको follow करते ही होंगे? हम आपसे सरल प्रश्न पूछते हैं?

क्या वही मन्त्र करते हो जो ये करते थे? नहीं, हम कुछ अलग मन्त्र करते हैं। हम आपको बता रहे हैं...हम वही मन्त्र करते हैं जो ये करते थे। तो follow कौन कर रहा है...आप या हम? हम follow कर रहे हैं।

अच्छा, क्या आप वही तिलक लगाते हो जो वे लगाते थे? नहीं। हम तो वही तिलक लगाते हैं जो वे लगाते थे। Follow कौन कर रहा है...आप या हम? हम follow कर रहे हैं।

अच्छा, क्या ये मंगला आरती जो वो करते थे...आरती जो वो करते थे ठाकुर जी की, क्या आप वैसे ही करते हो जैसे ये करते थे? नहीं। आप तीनों प्रभु की करते हो आरती? उसके बाद गदाधर श्रीवास को दिखाते हो? नहीं न! हम तो वैसे ही करते हैं। तो follow आप कर रहे हो या हम कर रहे हैं इनको?

गौरकिशोर बाबाजी को follow कौन कर रहा है?

भक्तिविनोद ठाकुर को follow कौन कर रहा है?

जगन्नाथदास बाबाजी को follow कौन कर रहा है? हम कर रहे हैं या आप कर रहे हैं? हम कर रहे हैं।

अच्छा, ये कपड़े डालते हैं सफेद। हम भी सफेद डालते हैं। आप लाल डालते हो। तो इनको follow कौन कर रहा है? आप या हम? हम follow कर रहे हैं। हम तो सफेद डालते हैं।

अच्छा, ये लोग काला तिलक लगाते थे। यह कौन सा तिलक है? यह भी काला है। आपका कौन सा है? पीला। तो आप इनको follow कर रहे हैं या हम कर रहे हैं? यह भी हम ही follow कर रहे हैं।

अच्छा भोग ये लगाते थे तीनों प्रभु को और ब्रज में पहले कृष्ण को, फिर राधा को, फिर मञ्जरियों को। हम भी ऐसे ही करते हैं। क्या आप भी ऐसे ही करते हो? नहीं। आप यह भी follow नहीं करते? नहीं। हम यह भी follow करते हैं।

सारी बातें तो हम follow कर रहे हैं उनकी। आप एक भी follow नहीं कर रहे। हम कहते हैं...हमारी परम्परा में भी नहीं हैं। आप कहते हो हमारी परम्परा में हैं। यह कौन सी परम्परा का followership है?

भाई! Follow का मतलब होता है कि एक चीज़ भी ऐसी नहीं होगी जो उनकी की हुई बात को काटूँगा। वो कभी भी गायत्री नहीं करते थे– *'ॐ भूर्भुव: स्व:.... '* आप करते हो? हाँ, करते हो। हम तो नहीं करते। तो follow कौन कर रहा है उनको...आप या हम? गायत्री के मामले में भी हम follow कर रहे हैं उनको।

अरे! वो हमारी परम्परा में नहीं हैं, तब भी हम follow करते हैं...हमारा तो...हम तो एक ही जाति के हैं सब लोग। हम तो एक पथ follow करेंगे ही सही। क्योंकि हम वही follow कर रहे हैं जो सनातन काल से follow हो रहा है। हमारा कोई invent है ही नहीं कुछ।

न हमारा जनेऊ है। कोई जनेऊ डालते थे जगन्नाथदास बाबाजी या गौरकिशोर दास बाबाजी? नहीं। हम डालते हैं? नहीं। तो आप क्यों डालते हो? वो अभिषेक राधाष्टमी पर केवल राधारानी

का करते हैं। आप किनका करते हो? राधा कृष्ण दोनों का करते हो। आप follow कर रहे हो या हम कर रहे हैं follow? जन्माष्टमी पर वो केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे, तीनों का नाम...वो मतलब तीनों...गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज, जगन्नाथदास बाबाजी महाराज, भक्तिविनोद ठाकुर...ये तीनों जन्माष्टमी पर केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे। इनकी जो परम्परा है...इनके पुत्र ललिता प्रसाद ठाकुर, ये भी केवल कृष्ण का अभिषेक करते थे। हम भी वही करते हैं। आप भी यही करते हो? नहीं। आप दोनों का करते हो। तो follow कौन कर रहा है? आप या हम? हम कर रहे हैं।

वस्त्र जो हैं, जो गुरु द्वारा प्रदत्त हैं...। हमारे गुरु ने हमें सफेद वस्त्र दिये। तो हम सफेद डालेंगे। आपके किसी गुरु ने आपको लाल वस्त्र दिये?

भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर से कौन पूछे कि

आपको लाल वस्त्र किसने दिये?
तिलक आपको पीला तिलक किसने दिया?
जनेऊ आपको किसने दिया?
जन्माष्टमी पर किसने कहा कि राधा कृष्ण का अभिषेक कर दो आप?
आपको किसने कहा कि राधाष्टमी पर राधा कृष्ण का अभिषेक कर दो?
नित्यानन्द त्रयोदशी पर दोनों का अभिषेक कर दो...किसने कहा?
किसने कहा कि पीला तिलक लगाना है? काला खराब है?

किसने कहा कि हमारे यहाँ सिर्फ नित्य नवद्वीप और नित्य ब्रज की उपासना है...किसने कहा?

किसने कहा कि सीताराम-लक्ष्मण-हनुमान के विग्रह को बीच में लाओ,
नृसिंह भगवान् के विग्रह को बीच में ले आओ...किसने कहा?

आपके गुरु ने कभी किया? उन्होंने आपको कहा यह करने के लिये? आप क्यों कर रहे हो? हम तो नहीं करते। तो हम इनको follow कर रहे हैं या आप कर रहे हो?

Follow करने का मतलब है...पहले जानना...। तभी तो हमने पूछा... तुमने कहा हम प्रभुपाद को जानते हैं केवल। अरे ! प्रभुपाद तो बाद में...वो कर क्या रहे हैं, यह तो जान लो। अच्छा, तुम प्रभुपाद को जानते हो...भक्तिविनोद ठाकुर को भी तो follow करते होंगे ? एक बात भी तो आप उनकी follow नहीं करते। एक बात...एक बात...। जैसे फुमन के लिये लगाया हुआ है परम्परा को अपने Altar में...showcase...showcase परम्परा बनाया हुआ है। नाम की परम्परा है, नाम के लिये डाला हुआ है।

ये कैसी followership है कि न हम भोग उनकी तरह लगाते हैं, न हम आरती उनकी तरह करते हैं, न वस्त्र उनकी तरह करते हैं, न तिलक उनकी तरह लगाते हैं, न गुरुप्रदत्त तिलक, न गुरुप्रदत्त मन्त्र करते हैं, न वो जो पञ्चतत्व मन्त्र करते हैं, वो भी अलग था, जो आप करते हो, वो भी अलग है। एक नयी बात और सुन लो। हम वही करते हैं उनके वाला। जो *'श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द... '* है, ये जगन्नाथदास बाबाजी ये नहीं करते थे, गौरकिशोर दास बाबाजी ये नहीं करते थे, और भक्तिविनोद ठाकुर भी नहीं करते थे।

वो क्या करते थे

'श्रीगौराङ्ग नित्यानन्द श्रीअद्वैतचन्द्र गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।'

वे यह मन्त्र करते थे, हम भी यही करते हैं। Follower आप हो उनके या हम हैं ? हमारा तो सब कुछ एक है न। हम एक घर के हैं। सभी एक बात follow करते हैं।

सोचो कैसी परम्परा है कि एक भी बात follow नहीं करते ! और हमारी कैसी परम्परा है...हम Alter में भी नहीं डालते, फिर भी हमारी सारी बातें same हैं। वही तो कह रहे हैं। आप हमें follow मत करो। आप जगन्नाथदास बाबाजी को follow करो क्योंकि उन्होंने कुछ add... subtract...कुछ नहीं किया।

अब आप कहते हो हमारी शिक्षा परम्परा है, दीक्षा परम्परा नहीं है। गौरकिशोर दास बाबाजी, भक्तिविनोद ठाकुर जो हैं, शिक्षा परम्परा में तो follow करना चाहिये शिक्षा को। ये सारी बातें

हमने आपको शिक्षा की तो बतायी हैं। ये हमने कोई private बातें...अपने घर की थोड़े न बतायी हैं आपको? ये शिक्षा हैं उनकी सारी। शिक्षा परम्परा में तो कोई व्यक्ति बात न माने, तो शिक्षा परम्परा में ही नहीं है। आप जब...एक बात नहीं मानते आप, शिक्षा परम्परा कहाँ से सिद्ध हो गयी? वो भी सिद्ध नहीं है। हम हैं शिक्षा परम्परा में इनकी। हमारी दीक्षा परम्परा भी अटूट, शिक्षा परम्परा भी अटूट। ५०० वर्ष से दोनों same चल रही हैं। अरे भाई! हम १५ साल Iskcon में रहे हैं। १५ साल यहाँ रह रहे हैं। हम दोनों मार्ग को ऐसे जानते हैं जैसे लोग अपने हाथ को जानते हैं।

सुस्पष्ट...ये लकीर ऐसे है और ये लकीरें ऐसे हैं।

13

We ONLY know and follow Śrīla Prabhupāda…!!

भक्त– महाराज जी ! जब वृन्दावन या ऐसे किसी स्थान पर जाते हैं, वहाँ जब Iskcon के भक्त मिलते हैं...तो बहुत ज़्यादा यह सुनने में आता है कि हम तो कुछ नहीं जानते, हम तो सिर्फ प्रभुपाद को ही follow करते हैं, प्रभुपाद के ग्रन्थ पढ़ते हैं। इसके अलावा हमें और कुछ पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, न ही जानने की ज़रूरत है। अगर बताने का भी प्रयास किया जाता है कि गौड़ीय वैष्णव के इतने महान् आचार्य...बड़े आचार्य हैं...उन्होंने इतने सारे ग्रन्थ लिखे हैं, वो पढ़ने का प्रयास करो, तो एक ही उत्तर आता है कि...नहीं, हम तो प्रभुपाद के अलावा और कुछ नहीं जानते हैं, न ही पढ़ते हैं, न ही पढ़ना चाहते हैं।

तो ऐसे भक्तों के लिये आप मार्गदर्शन करें, ताकि ऐसे भक्त भी सही पथ पर आ सकें। आपसे निवेदन है महाराज जी !

महाराज जी– "प्रभुपादजी को ही follow करते हैं और हम कुछ नहीं जानते। "तो यह बात ही अपने आप में अज्ञानता से भरी हुई है। और आप अज्ञानता पर अपना जीवन चला रहे हो, तो सफलता कैसे होगी ? सबसे पहले होना चाहिये कि मैं कौन हूँ ? यह जानना है कि मैं ये...इनके अलावा... इनको, उनको छोड़ो, सबको छोड़ो। पहले तुम जानो तुम कौन हो ?

मैं एक कण हूँ, मैं आत्मा हूँ, कण हूँ, भगवान् का अंश हूँ, कण...। महाप्रभु ने बोला है– आप एक आध्यात्मिक कण हो। आपका किसी से कोई सम्पर्क नहीं है। *'ब्रह्माण्ड भ्रमिते'* हो। अब आपको आनन्द चाहिये।

आनन्द कौन है ? *रसो वै स:*। वो भगवान् हैं। ठीक है।
तो भगवान् की प्राप्ति कैसे होती है ? भक्ति से होती है। ठीक है।
भक्ति कैसे होती है ? ४ सम्प्रदायों में से किसी से जुड़ कर। ठीक है।
क्या कोई श्रेष्ठ या ऊँचे-नीचे रस का आस्वादन भी होता है भक्ति में ? हाँ, होता है।

५ रस होते हैं? हाँ...होते हैं।
सबसे श्रेष्ठ रस क्या है? माधुर्य रस।
क्या मैं प्रवेश कर सकता हूँ? हाँ।
माधुर्य रस में भी कोई division है? हाँ है।
क्या division है? Direct कृष्ण अंग-संग या मञ्जरी भाव– राधाकृष्ण दासी।
तो क्या मैं दासी बन सकता हूँ? हाँ बन सकते हो।
उसमें क्या करना होगा? जुड़ना होगा।
किससे? गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय से।

वो क्या होता है? वो ये होता है...जो गौड़ीय वैष्णव...। महाप्रभु जो देने आये थे, पहले वो जाने कि वो क्या होता है।

वो हमने इतना बड़ा अभी प्रवचन दिया कि महाप्रभु क्या देने आये थे?

तो सबसे पहले यह मानो कि मैं कण हूँ, मैं मनुष्य नहीं हूँ। मेरा पृथ्वी में किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, तो पृथ्वी में किसी संस्था से कैसे सम्बन्ध हो सकता है?

मैं *ब्रह्माण्ड भ्रमिते* हूँ, पृथ्वी भ्रमिते नहीं। *"ब्रह्माण्ड भ्रमिते कोन भाग्यवान् जीव"*। तो *ब्रह्माण्ड भ्रमिते* का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है...न व्यक्ति से, न किसी संस्था से। मुझे आनन्द चाहिये। भक्ति से मिलेगा। भक्ति में सबसे श्रेष्ठ परकीय भाव की उपासना है। राधाकृष्ण की सेवा मिलेगी यदि हम यह समझेंगे कि महाप्रभु क्या देने आये हैं। अगर आप यह जानना चाहते हो, अपना जीवन सफल करना चाहते हो, तो पहले यह जानो कि महाप्रभु देने क्या आये हैं? यह जान जाओगे, तो फिर आपका यह प्रश्न ही नहीं रहेगा कि हम इनके अलावा किसी को नहीं जानते... उनके अलावा...। आप actually में कुछ भी नहीं जानते।

इनके अलावा कुछ नहीं जानते...आप अपने आप को नहीं जानते। पहले अपने आप को जान लो, फिर किसी और को जानना। खुद को नहीं जानते आप!

मैं कण हूँ। I am not mind। यह कौन बोल रहा है कि मैं इनके अलावा किसी को नहीं जानता? कौन बोल रहा है? Mind बोल रहा है। तो आप mind हो? Mind को जोड़ कर बातें करते हो। आपको यह भी नहीं पता आप कौन हो।

महापुरुषों के चरणों में बैठोगे, तो आपको पहले यह पता चलेगा कि आप हो कौन? महाप्रभु क्या देने आये हैं यदि यह पता चल जायेगा, तो यह प्रश्न ही नहीं रहेगा कि हम प्रभुपादजी के अलावा किसी को नहीं जानते या Iskcon के अलावा। यह प्रश्न ही नहीं रहेगा। हमने कभी नहीं कहा कि हम से जुड़ो। हम सिर्फ एक ही निवेदन कर रहे हैं– कृपया करके यह जान लो कि महाप्रभु क्या देने आये हैं। Gauḍīya Vaiṣṇavism क्या है...गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय...यह तो जान लो। अपने ऊपर रहम खा कर यह तो जान लो कि वो होता क्या है गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय। कि कोई successful organization है... बस हम उससे जुड़े हुए हैं...वही famous गुरु से, यह कोई बुद्धिमता की बात नहीं है।

अब आपका Iskcon मन्दिर है। उसके साथ में एक है संस्था– 'भज निताइगौर राधेश्याम जपो हरे कृष्ण हरे राम'। Iskcon के अलावा सबसे successful organization वही है पूरे planet में गौड़ीय में। तो उनको भी फिर वो लोग मानते हैं, वो भी सही होंगे फिर? उनके गुरु ने बड़े चमत्कार करे थे। राधारमणचरण दास बाबाजी महाराज...उन्होंने भी बड़े चमत्कार किये थे। तो वे अपने गुरु को मानते हैं, तुम अपने गुरु को। तुम कहते हो...वे गलत हैं। वो कहते हैं... तुम गलत हो। हम कहते हैं...हमें तुम दोनों से क्या करना है, सही हो...गलत हो। हम तो महाप्रभु क्या देने आये हैं, यह जानते हैं। उसमें न कुछ add किया जाये, न subtract किया जाये। वो जान लो, वो ले लो।

14

DEITIES –
Rādhā-London Īśvara
Rādhā-Paris Īśvara
Rādhā-Bombay Īśvara

भक्त– महाराज जी! हमने Internet पर देखा था कि London में एक मन्दिर है और उस मन्दिर में जो विग्रह हैं, उसमें उनका उन्होंने नाम रखा 'London Īśvara'। तो सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ। तो आपसे जानना चाह रहे थे महाराज जी, क्या यह नाम उचित है?

महाराज जी– 'Rādhā London Īśvara'- यह एक मन्दिर में राधाकृष्ण के विग्रह को नाम दिया गया है और हमने... आपने नहीं सुना होगा... एक मन्दिर में राधाकृष्ण के विग्रह को नाम दिया 'Rādhā Paris Īśvara' भी... कि वो 'Rādhā London Īśvara', 'Rādhā Paris Īśvara'... अब प्रश्न है कि यह नाम उचित है या नहीं ? यह आप खुद ही निर्णय कर सकते हैं।

ठाकुर...जो हमारे विग्रह हैं, वे कोई एक सांकेतिक नहीं हैं कि संकेत करने के लिये कि ये हमारे ठाकुर हैं। वे हमारे प्राण हैं! जिस नाम से उन्हें हम यहाँ पुकारते हैं, उसी नाम से उन्हें हम नित्य पुकारेंगे। इसलिये तो उनकी उपासना रोज़ कर रहे हैं, नहीं तो क्यों करेंगे? जिनकी उपासना कर रहे हैं, वे हमारे कतरे-कतरे में घुल जायें। आप सोचिये, क्या कभी आपके कतरे-कतरे में London Īśvara घुल सकता है ?

एक London मतलब संसारी...एक geographical स्थान London। अब जैसे मान लो किसी का अचानक मन करे, तो फिर भारत में वो अपने... राधाकृष्ण की मूर्ति ले और नाम रख दे Rādhā Bombay Īśvara या किसी के मन्दिर का...वो लिख दे Ahmedabad Īśvara या किसी का और मन करे विदेशी का...Rādhā Czechoslovakia Īśvara...तो यह तो अशास्त्रीय है बिल्कुल! इसका कोई औचित्य नहीं है। थोड़े दिनों पहले तो London था भी नहीं। मान लो

अभी कोई और country कब्ज़ा कर लेती है, वो बन जाता है West Indies या कुछ भी... तो आपका जो ईश्वर है, उसका अस्तित्व ही नहीं रहा।

London का ही अस्तित्व ही नहीं रहा, तो किसके ईश्वर हैं वो ? जो चीज़ है नहीं, उसके ईश्वर ? तो वो बिल्कुल व्यर्थ के नाम हैं। हा प्राणनाथ ! हा गोपीनाथ ! हा मदनमोहन ! हे गोविन्द ! ये तो सुना है सभी ने। हा London Īśvara ! हा हा Patna Īśvara ! ऐसा नहीं होता। यह अशास्त्रीय है और यह शास्त्र मर्यादा का उल्लंघन करके ये नाम लिये गये हैं।

एक और स्थान है... मन्दिर है, वहाँ नाम है... 'किशोर-किशोरी'। पुराणों में वर्णन आता है कि जब भी विग्रह का नाम दो, पहले राधा का नाम होगा, फिर श्रीकृष्ण का नाम होगा। यह पुराणों में आदेश हैं ठाकुरजी के। तो किशोर-किशोरी में नाम पहले किसका है ? श्रीकृष्ण का। तो खुद ही निर्णय कर सकते हैं, यदि पुराण भगवद् वाणी हैं, तो यह कितना शास्त्रीय है ? Rādhā London Īśvara के बारे में तो विचार करने की भी ज़रूरत नहीं है। Paris Īśvara, कोई और advance हो गया हो... आप कहो... हम Tilak Nagar... तो Rādhā Tilak Nagar Īśvara... आप कुछ भी लिख सकते हो... कुछ भी बना दो... यह अनुचित है। Geographical नाम नहीं होता भगवान् का। नित्य नाम होता है, प्रेम का नाम। प्रेम से जो भक्त पुकारते हैं, वह ठाकुरजी का नाम होता है। लीला सम्बन्धित होता है नाम।